राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

दिव्य दिनकर

एक निडर सच का दर्पण

रांची और पटना से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 12 अकं :210 रांची (झारखंड) सोमवार,12 मई 2025 पेज - 08 मूल्य: 2 RNI NO- JHAHIN/2013/54373

रावलपिंडी तक सुनी गई भारत की सेनाओं की धमक, 'आपरेशन सिंदूर' ने दिलाया पीड़ित परिवारों को इंसाफ : राजनाथ सिंह

एजेंसी

लखनऊ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए उत्तर प्रदेश के लखनऊ में ब्रह्मोस एयरोस्पेस की इंटीग्रेशन एवं टेस्टिंग फैसिलिटी का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि मेरा शहर लखनऊ भारत के डिफेंस सेक्टर को मजबूत करने में एक बड़ा योगदान दे, वह सपना अब पूरा हो रहा है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के लिए भारतीय सेना की तारीफ की। उन्होंने कहा कि जिन भारत विरोधी और आतंकी संगठनों ने भारत माता के मस्तक पर हमला करके कई परिवारों के सिंदूर मिटाए थे, उन्हें भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से इंसाफ दिलाने का काम किया है। इसके लिए आज सारा देश भारतीय सेनाओं का अभिनंदन कर रहा है। ऑपरेशन सिंदूर सिर्फ एक सैन्य कार्रवाई भर नहीं है, बल्कि भारत की राजनीतिक, सामाजिक और सामरिक इच्छाशक्ति का प्रतीक है। यह ऑपरेशन आतंकवाद के खिलाफ भारत की दृढ़ इच्छाशक्ति और सैन्य शक्ति की क्षमता और संकल्प शक्ति का भी प्रदर्शन है। हमने दिखाया है कि भारत आतंकवाद के खिलाफ जब भी कोई कार्रवाई करेगा तो आतंकवादियों और उनके आकाओं के लिए सरहद पार की जमीन भी सुरक्षित नहीं रहेगी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कार्यक्रम को वर्चुअली रूप से संबोधित करते हुए आगे कहा, ÷भारतीय सेनाओं ने

ऑपरेशन सिंदूर को पाकिस्तान में मौजूद आतंकी ढांचा ढहाने के उद्देश्य से लॉन्च किया था। हमने उनके आम नागरिकों को कभी निशाना नहीं बनाया था। मगर पाकिस्तान ने न केवल भारत के नागरिक इलाकों को निशाना बनाया बल्कि मंदिर, गुरुद्वारा और गिरजाघर पर भी हमले करने का प्रयास किया। भारतीय सेना ने शौर्य और पराक्रम के साथ-साथ संयम का भी परिचय देते हुए पाकिस्तान के अनेक सैन्य ठिकानों पर प्रहार करके करारा जवाब दिया है। हमने केवल सीमा से सटे सैन्य ठिकानों पर ही कार्रवाई नहीं की, बल्कि भारत की सेनाओं की धमक उस रावलपिंडी तक सुनी गई, जहां पाकिस्तानी फौज का हेडक्वार्टर मौजूद है। राजनाथ सिंह ने कहा कि भारत में आतंकवादी घटनाएं करने और कराने का क्या अंजाम होता है, यह पूरे विश्व ने उरी की घटना के बाद देखा। जब हमारी सेना ने पाकिस्तान में घुसकर सर्जिकल स्ट्राइक की, पुलवामा के बाद देखा जब बालाकोट पर एयर स्ट्राइक की गई और अब पहलगाम की घटना के बाद दुनिया देख रही है, जब भारत ने पाकिस्तान के भीतर घुसकर मल्टीपल स्ट्राइक्स की हैं। आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति पर चलते हुए हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्पष्ट कर दिया है कि यह नया भारत है, जो आतंकवाद के खिलाफ सरहद के इस पार और उस पार दोनों तरफ प्रभावी कार्रवाई करेगा। उन्होंने आगे कहा, ÷आज का दिन हमारे शहर लखनऊ और हमारे राज्य उत्तर प्रदेश और पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। मैं समझता हूं कि आज का दिन उस शक्ति की आराधना का दिन है, जो हमारी सेनाओं को संबल प्रदान करती है, जो हमारी सेनाओं में निहित होकर दुश्मन पर कहर बरपाती है। आज का दिन मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि मैंने अपने शहर लखनऊ के लिए एक सपना देखा था कि मेरा शहर भारत के डिफेंस सेक्टर को मजबूत करने में एक बड़ा योगदान दे।

अमेरिका के दबाव में किया सीजफायर, सरकार ने पीओके वापस लेने का मौका गंवाया : राशिद अल्वी

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राशिद अल्वी ने भारत-पाक संघर्ष के बीच सीजफायर की घोषणा के बाद केंद्र सरकार पर सवाल खड़े किए। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने अमेरिका के दबाव में सीजफायर किया। ऐसा करने की जरूरत नहीं थी और हमने ऐसा करके पीओके को वापस हासिल करने का सुनहरा अवसर गंवा दिया। रविवार को समाचार एजेंसी से बातचीत के दौरान राशिद अल्वी ने कहा कि जब पूरा देश एक साथ होकर भारत सरकार के साथ आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए खड़ा था तो ऐसे समय में भारत ने अमेरिका में दबाव में सीजफायर किया। तीन दिनों में हमारी सेना ने पूरी दुनिया को अपनी ताकत दिखाई। लेकिन क्या भारत सरकार ने वो

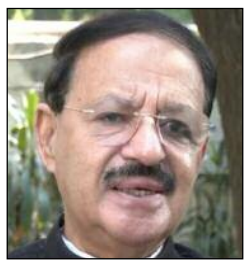

मकसद हासिल कर लिया, जिसके लिए यह सब कुछ किया गया था। भारत सरकार ने सीजफायर की घोषणा की, लेकिन क्या इस फैसले से पहले उन्हें सभी राजनीतिक दलों से एक बार विचार-विमर्श नहीं करना चाहिए था? उन्होंने कहा कि आज पूरा देश सरकार के साथ है। हमारी सेना तैयार है, लेकिन पीओके पाकिस्तान के पास रह गया। हमें उसे लेना चाहिए था। इससे बेहतर मौका और नहीं हो सकता था। अमेरिका के दबाव में हमें सीजफायर नहीं करना चाहिए था। सीजफायर के बाद बॉर्डर पर शांति बहाल होने पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता ने कहा कि सीजफायर के बाद हमले का कोई सवाल नहीं उठता है। लेकिन पाकिस्तान पर भरोसा नहीं किया जा सकता। पाकिस्तान कभी भी हमसे सीधे तौर पर लड़ नहीं सकता है। इसलिए वह दहशतगर्दों के दम पर आतंक फैलाना चाहता है।

हावड़ा में कर्ज के दबाव में पूरे परिवार ने दी जान

हावड़ा। पश्चिम बंगाल के हावड़ा में कर्ज के दबाव में आकर पूरे परिवार ने आत्महत्या कर ली। घटना शनिवार देर शाम डोमजूर थाना अंतर्गत बांकाड़ा के सरतपल्ली इलाके की है। घर से एक ही परिवार के तीन सदस्यों के शव बरामद किये गये। पुलिस के अनुसार मृतकों की पहचान शेफाली घोरुई (65), उनकी बेटी संगीता घोरुई (45) और बेटे शुभमय घोरुई (42) के रूप में हुई है। प्रथम दृष्टया पुलिस का मानना है कि जहर खाने से तीनों लोगों की मौत हुई है। पीडब्ल्यूडी के संविदा कर्मचारी शुभमय ने विभिन्न स्थानों से ऋण ले रखा था। वह कर्ज को लौटा नहीं पा रहा था। लेनदार अक्सर पैसे मांगते थे। शनिवार दोपहर भी एक ऋणदाता पैसे मांगने आया। उस समय घर बंद मिला। लेकिन पूरे दिन जब घर का दरवाजा नहीं खुला तो शाम को पड़ोसियों ने पुलिस को खबर दी। मौके पर पुलिस पहुंची और दरवाजा तोड़ा तो घर के अंदर से तीन लोगों के शव बरामद किए गए। घटना के बारे में पड़ोसी प्रशांत बनिक ने बताया कि शेफाली घोरुई के बेटे शुभमय पर कई जगहों से कर्ज का दबाव था। । ऋणदाता अपना पैसा वापस मांगते थे। पैसे चुकाने में असमर्थ शुभमय, उसकी मां और बहन ने जहर खाकर आत्महत्या कर ली। बहन संगीता अविवाहित थीं और विकलांग थी।

त्रिपुरा की अदालत ने पांच बंगलादेशी नागरिकों को 12 दिन की जेल भेजा

अगरतला। त्रिपुरा के उनोकोटी जिले के कैलाशहर की एक स्थानीय अदालत ने पांच बंगादेशी नागरिकों को बिना वैध दस्तावेजों के अंतरराष्ट्रीय सीमा पार करने के आरोप में 12 दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया। एक गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने शुक्रवार रात

देपाछरा गांव से एक वर्षीय बच्चे समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया था। पूछताछ के दौरान, उन्होंने जिले के पेचारथल थाना क्षेत्र के मचमारा में रहने वाले दो अन्य लोगों के ठिकाने का खुलासा किया और पुलिस ने उन्हें भी तुरंत गिरफ्तार कर लिया। पुलिस पूछताछ के लिए आरोपियों को उन दो स्थानों पर ले गई, जहां बंगलादेशी नागरिक छिपे हुए थे और पता चला कि सभी पांच बंगलादेश मौलवीबाजार जिले के निवासी हैं और उनका भारतीय घरवालों से संबंध है। उन्हें उनाकोटी जिला न्यायालय में पेश किया गया, जिसने उन्हें 22 मई तक न्यायिक हिरासत में भेज दिया।

पीएम मोदी ने की उच्च स्तरीय बैठक

रक्षा मंत्री और एनएसए समेत तीनों सेनाओं के प्रमुख रहे मौजूद

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अपने आवास पर शीर्ष रक्षा अधिकारियों के साथ एक उच्च-स्तरीय बैठक की अध्यक्षता की। इस बैठक में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल, चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान और तीनों सेनाओं के प्रमुख मौजूद रहे।

यह बैठक पाकिस्तान के साथ सीमा पर तनावपूर्ण शांति के बीच हुई, जहां फिलहाल संघर्ष विराम के उल्लंघन की कोई नई घटना सामने नहीं आई है। दरअसल, पाकिस्तान ने संघर्ष विराम का उल्लंघन किया, लेकिन रात में शांति रही। इससे पहले, पाकिस्तान ने संघर्ष विराम का पालन करने को लेकर प्रतिबद्धता जताई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने संघर्ष विराम की घोषणा की थी और नई दिल्ली ने कहा कि भारत और पाकिस्तान ने गोलीबारी और सैन्य कार्रवाई रोकने पर सहमति बना ली है। इस बीच, विदेश मंत्री जयशंकर ने स्पष्ट तौर पर कहा कि भारत आतंकवाद के सभी रूपों के खिलाफ दृढ़ और अडिग रुख बनाए रखा है और ऐसा करना जारी रखेगा।

हालांकि, पाकिस्तान ने भारत के कड़े जवाब के बाद अमेरिका से शांति की मध्यस्थता की मांग की थी। इसके बाद उसने भी संघर्ष विराम की घोषणा की, लेकिन बाद में फिर से उल्लंघन किया। भारत ने तुरंत जवाबी कार्रवाई की, जिसके बाद पाकिस्तान ने ड्रोन और मिसाइल भेजना बंद कर दिया। भारत ने स्पष्ट रूप से कहा कि श्रीनगर, गुजरात के कुछ हिस्सों और राजस्थान के बाड़मेर सहित जम्मू और कश्मीर के विभिन्न स्थानों पर पाकिस्तानी ड्रोन देखे गए, जिसके बाद उन्हें रोका गया। इतना ही नहीं, कई सीमावर्ती क्षेत्रों में फिर से ब्लैकआउट करना पड़ा। भारत ने कहा कि पाकिस्तान ने संघर्ष विराम का उल्लंघन किया है और भारतीय सशस्त्र बल इसका उचित और कड़ा जवाब दे रहे हैं। देर रात प्रेस ब्रीफिंग में विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि भारत ने इन उल्लंघनों को बेहद गंभीरता से लिया है। उन्होंने कहा, हम पाकिस्तान से आग्रह करते हैं कि वह इन उल्लंघनों को रोकने और स्थिति को गंभीरता तथा जिम्मेदारी से संभालने के लिए उचित कदम उठाए। सशस्त्र बल स्थिति पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं और उन्हें अंतरराष्ट्रीय सीमा व नियंत्रण रेखा पर किसी भी उल्लंघन का कड़ाई से जवाब देने के सख्त निर्देश दिए गए हैं। हालांकि, बाद में पाकिस्तान ने कहा कि वह संघर्ष विराम समझौते को ईमानदारी से लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है ।

'ऑपरेशन अभी भी जारी है...', युद्धविराम के बीच भारतीय वायुसेना का बड़ा बयान

आईएएफ ने 'ऑपरेशन सिंदूर' में अपने कार्यों को सटीक और पेशेवर ढंग से सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत-पाकिस्तान के बीच युद्धविराम की घोषणा के बाद भारतीय वायु सेना (आईएएफ) का 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर बयान सामने आया है। भारतीय वायु सेना ने बताया कि ऑपरेशन अभी जारी है। भारतीय वायु सेना ने रविवार को अपने एक्स हैंडल पर एक पोस्ट शेयर करते हुए बताया, 'भारतीय वायु सेना (आईएएफ) ने 'ऑपरेशन सिंदूर' में अपने कार्यों को सटीक और पेशेवर ढंग से सफलतापूर्वक अंजाम दिया है। ऑपरेशन को राष्ट्रीय उद्देश्यों के अनुसार सोच-समझकर और गोपनीय तरीके से अंजाम दिया गया है। चूंकि ऑपरेशन अभी जारी है, इसलिए विस्तृत जानकारी बाद में दी जाएगी।' उन्होंने अटकलों और असत्यापित जानकारी से बचने की अपील करते हुए आगे लिखा, ÷भारतीय वायु सेना सभी से अनुरोध

करती है कि वे अटकलों और असत्यापित जानकारी के प्रसार से बचें। बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव को लेकर बड़ी घोषणा की थी। उन्होंने कहा था कि भारत-पाकिस्तान पिछले तीन दिनों से जारी संघर्ष पर तत्काल पूर्ण युद्धविराम के लिए सहमत हो गए हैं। यह सहमति अमेरिका की मध्यस्थता से पूरी हुई है।हालांकि, युद्धविराम के उल्लंघन को लेकर विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने शनिवार देर रात कहा कि सेना को सख्त कदम उठाने के आदेश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि भारत और पाकिस्तान के डीजीएमओ के बीच सैन्य कार्रवाई रोकने को लेकर शनिवार शाम हुए समझौते का पाकिस्तान ने कुछ ही घंटों में ÷घोर उल्लंघन' किया है। विक्रम मिस्री ने मीडिया को बताया था कि भारतीय सेना पूरी दृढ़ता से जवाबी कार्रवाई कर रही है और सीमा पर हो रहे अतिक्रमण को रोकने में जुटी है। उन्होंने कहा था कि पाकिस्तान की ओर से यह कार्रवाई 'अत्यंत निंदनीय है और इसकी पूरी जिम्मेदारी पाकिस्तान पर है'। इससे पहले भारत सरकार ने आतंकवाद के खिलाफ जारी लड़ाई को लेकर बड़ा फैसला लिया। सरकार ने सख्त संदेश देते हुए कहा कि भविष्य में कोई भी आतंकी घटना भारत के खिलाफ युद्ध की कार्रवाई मानी जाएगी। भारत सरकार के शीर्ष सूत्रों ने कहा था।

भारत-पाकिस्तान सीमा के करीब से आरडीएक्स, हैंड ग्रेनेड व हथियार बरामद

एजेंसी

चंडीगढ़। बीएसएफ ने पंजाब पुलिस के साथ मिलकर भारत-पाकिस्तान सीमा से आरडीएक्स तथा हैंड ग्रेनेड व कई हथियार बरामद किए हैं। विस्फोटक सामग्री व हथियार बरामद करने के बाद बीएसएफ और पंजाब पुलिस ने मिलकर सीमावर्ती

क्षेत्र में सर्च ऑपरेशन शुरू कर दिया है। जानकारी के अनुसार रविवार सुबह ग्रामीणों ने पुलिस को इस बारे में सूचित किया कि गांव चक बाला के पास कुछ संदिग्ध वस्तुएं पड़ी हैं। बीएसएफ तथा पंजाब पुलिस की टीम वहां पहुंची और पूरे गांव को घेर लिया। इसके बाद खेतों में चलाए गए सर्च ऑपरेशन के दौरान यहां से 972 ग्राम आरडीएक्स, एक रिमोट कंट्रोल डिवाइस और चार्जर, दो हैंड ग्रेनेड, दो डेटोनेटर, आठ बैटरियां, एक ब्लैक बॉक्स, 30 जिंदा कारतूस तथा दो पिस्टल व चार मैगजीन बरामद की हैं। पंजाब पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने इस बरामदगी की पुष्टि करते हुए कहा कि यह किसी बड़ी आतंकी घटना को अंजाम दिए जाने का प्रयास हो सकता है जिसे पुलिस तथा बीएसएफ ने मिलकर विफल बनाया है। डीजीपी ने बताया कि अमृतसर के अजनाला पुलिस थाने में इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है।

'ट्रंप की मध्यस्थता' पर कपिल सिब्बल को ऐतराज, विशेष संसद सत्र बुलाने की उठाई मांग

एजेंसी

नई दिल्ली। राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की उनके हालिया सोशल मीडिया पोस्ट पर आलोचना की, जहां उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता की पेशकश की थी। जिस पर राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की पोस्ट पर राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने कहा, 'इस पोस्ट पर भी कई सवाल उठेंगे, तो क्या हुआ (भारत-पाकिस्तान समझौते के बारे में), कैसे और क्यों, इस बारे में हमें कोई जानकारी नहीं दी गई है इसलिए हम आज कोई आलोचना नहीं करेंगे। हम केवल यह चाहते हैं कि संसद का विशेष सत्र हो और सर्वदलीय बैठक बुलाई जाए। मैं सभी राजनीतिक दलों से अपील करना चाहता हूं कि जब तक सरकार उन्हें यह आश्वासन नहीं देती कि प्रधानमंत्री भी बैठक में मौजूद रहेंगे, तब तक वे बैठक में शामिल न हों। मुझे पूरा भरोसा है कि अगर डॉ.

मनमोहन सिंह आज प्रधानमंत्री होते, तो वे सर्वदलीय बैठक में मौजूद होते और विशेष सत्र भी बुलाया जाता।

उन्होंने कहा, लाहौर में आतंकी ठिकानों पर सेना ने मुंहतोड़ जवाब दिया। पूरा देश सेना को सलाम कर रहा है। हालांकि, उन्होंने इस बात पर नाराजगी जताई कि युद्धविराम के बाद भी सरकार ने विशेष संसद सत्र बुलाने की उनकी मांग पर कोई जवाब नहीं दिया। सिब्बल ने कहा कि अब जब युद्धविराम हो चुका है, तो सरकार को तुरंत विशेष सत्र बुलाना चाहिए ताकि देश के सामने स्थिति स्पष्ट हो और किसी भी तरह की कड़वाहट से बचा जा सके।सिब्बल ने 2002 में पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय 26 लोगों की हत्या के बाद सर्वदलीय बैठक बुलाई गई थी, लेकिन हाल की घटनाओं के बाद बुलाई गई बैठक में प्रधानमंत्री मोदी मौजूद नहीं रहे। प्रधानमंत्री उस समय बिहार और केरल में थे। यह ठीक नहीं लगा कि इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर वे बैठक में शामिल नहीं हुए। पूर्व वित्त मंत्री पी. चिदंबरम के एक लेख का जिक्र करते हुए कहा कि इस समय सभी को सेना की प्रशंसा करनी चाहिए। उन्होंने कहा, हमने भी सेना की तारीफ की है। चिदंबरम ने गाजा के संदर्भ में बात की, लेकिन यह समय सेना की बहादुरी को सलाम करने का है।

लखनऊ में ब्रह्मोस मिसाइल यूनिट का उद्घाटन

सीएम योगी बोले- आतंकवाद को पूरी तरह कुचलना ही समाधान

एजेंसी

लखनऊ। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को वर्चुअल माध्यम से लखनऊ में ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल उत्पादन यूनिट का उद्घाटन कर दिया है। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और ब्रजेश पाठक समेत कई नेता मौजूद रहे। इस दौरान यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा, आपने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान ब्रह्मोस मिसाइल की एक झलक देखी होगी। अगर नहीं देखी तो पाकिस्तान के लोगों से ब्रह्मोस मिसाइल की ताकत के बारे में पूछिए। पीएम नरेंद्र मोदी ने घोषणा की है कि आगे से आतंकवाद की कोई भी कार्रवाई युद्ध की कार्रवाई मानी जाएगी। आतंकवाद की समस्या का समाधान तब तक नहीं हो सकता है, जब तक हम इसे पूरी तरह से कुचल नहीं देते। आतंकवाद को कुचलने के लिए हम सभी को पीएम नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक स्वर में लड़ना होगा। आतंकवाद कभी भी प्यार की भाषा नहीं अपना सकता। उसे उसी की भाषा में जवाब देना होगा। 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए भारत ने पूरी दुनिया को संदेश दिया है। दरअसल, लखनऊ में नई ब्रह्मोस मिसाइल उत्पादन फैसिलिटी शुरू हुई है, जो भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमता को मजबूत करेगी। यह यूनिट प्रतिवर्ष 80 से 100 ब्रह्मोस मिसाइलें बनाएगी।300 करोड़ रुपये की लागत से बनी इस यूनिट में ब्रह्मोस मिसाइल बनाई जाएगी, जो 290-400 किमी की रेंज और 2.8 मैक की गति से

सटीक हमला कर सकती है। यह मिसाइल भारत के डीआरडीओ और रूस के एनपीओ मशीनोस्ट्रोयेनिया के संयुक्त उद्यम, ब्रह्मोस एयरोस्पेस द्वारा विकसित की गई है। इसे जमीन, समुद्र या हवा से लॉन्च किया जा सकता है और यह फायर एंड फॉरगेट सिस्टम पर काम करती है।

इसके अलावा, यूनिट हर वर्ष 100 से 150 अगली पीढ़ी की ब्रह्मोस मिसाइलें भी बनाएगी। अधिकारियों के अनुसार, ये नए संस्करण एक वर्ष के भीतर डिलीवरी के लिए तैयार हो जाएंगे। इसके अलावा, अगली पीढ़ी की मिसाइल का वजन 2,900 किग्रा से घटाकर 1,290 किग्रा किया गया है और इसकी रेंज 300 किमी से अधिक होगी। इससे सुखोई जैसे लड़ाकू विमान, जो अभी एक मिसाइल ले जाते हैं, तीन मिसाइलें ले जा सकेंगे।

यह यूनिट 2018 में पीएम नरेंद्र मोदी द्वारा घोषित रक्षा औद्योगिक गलियारे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 2021 में इसका शिलान्यास हुआ था और उत्तर प्रदेश सरकार ने इसके लिए 80 हेक्टेयर जमीन उपलब्ध करवाई थी। यह यूनिट मात्र साढ़े तीन साल में बनकर तैयार हुई है। बता दें कि उत्तर प्रदेश रक्षा औद्योगिक गलियारे में छह नोड्स शामिल हैं, जिनमें लखनऊ, कानपुर, अलीगढ़, आगरा, झांसी और चित्रकूट है। इसका लक्ष्य रक्षा उत्पादन में बड़े निवेश को आकर्षित करना है। तमिलनाडु के बाद उत्तर प्रदेश दूसरा राज्य है, जिसने एक समर्पित रक्षा गलियारा स्थापित किया है, जो राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा उत्पादन में उसकी भूमिका को और मजबूत करता है।

राहुल और खड़गे की पीएम से मांग, ऑपरेशन सिंदूर और युद्ध विराम पर चर्चा के लिए बुलाएं विशेष संसद सत्र

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखकर पहलगाम आतंकी हमले, ऑपरेशन सिंदूर और युद्ध विराम घोषणा पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र तुरंत बुलाने की मांग की है। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अपने पत्र में लिखा, ÷मैं विपक्ष के सर्वसम्मति से किए गए अनुरोध को दोहराता हूं कि संसद का विशेष सत्र तुरंत बुलाया जाए। लोगों और उनके प्रतिनिधियों के लिए पहलगाम आतंकी हमले, ऑपरेशन सिंदूर और आज के युद्धविराम पर चर्चा करना बहुत जरूरी है, जिसकी घोषणा सबसे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने की थी। यह सत्र आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए हमारे सामूहिक संकल्प को प्रदर्शित करने का अवसर होगा। मुझे विश्वास है कि आप इस मांग पर गंभीरता से और तेजी से विचार करेंगे। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने 28 अप्रैल के अपने पत्र का जिक्र किया, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी से पहलगाम आतंकवादी हमले पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाने का आग्रह किया था। खड़गे ने अपने पत्र में लिखा, माननीय प्रधानमंत्री जी, कृपया याद करें कि मैंने राज्यसभा में विपक्ष के नेता के रूप में आपसे क्या कहा था। मैंने 28 अप्रैल को लिखे पत्र के माध्यम से आपसे पहलगाम में हुए अमानवीय आतंकवादी हमले को देखते हुए संसद के दोनों सदनों का विशेष सत्र बुलाने का अनुरोध किया था। नवीनतम घटनाक्रमों के मद्देनजर लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष ने आपको फिर से पत्र लिखकर सभी विपक्षी दलों के सर्वसम्मत अनुरोध से अवगत कराया है। उन्होंने संसद का विशेष सत्र बुलाने का आग्रह किया है।

संक्षिप्त समाचार

ऑक्सफोर्ड स्कूल करगे मांडर में मातृ दिवस कार्यक्रम का आयोजन

दिव्य दिनकर संवाददाता

मांडर - आज ऑक्सफोर्ड स्कूल करगे मांडर में मातृ दिवस के उपलक्ष्य में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, जिसने सभी दर्शकों का मन मोह लिया। विद्यालय प्रशासन द्वारा इस आयोजन का उद्देश्य माताओं के प्रति सम्मान और बच्चों में पारिवारिक मूल्यों की भावना को प्रोत्साहित करना था। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित अभिभावकों और शिक्षकों ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन की सराहना की। मौके पर निदेशक नौसाद आलम, प्रधानाचार्य आशा बर्मन, अनुभा तिवारी, मीनाक्षी, पूजा,नाजिया,रेशम बाला कुमारी तौफीक,जावेद अहमद, गुलप्सा, असफा, नाहिद, दीपाली, मेहर, मसूद, अरशद, अंजना, रौसनी समेत स्कूल के छात्र छात्राएं मौजूद थे!

बैशाख पूर्णिमा पर संकट मोचन धाम पाथरोल में भजन संध्या, महाआरती एवं प्रसाद वितरण आज

पाथरोल, करौं, देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता उमेश चन्द्र मिश्रा की रिपोर्ट

संकट मोचन धाम, पाथरोल में आज बैशाख पूर्णिमा के पावन अवसर पर भव्य भजन संध्या, महाआरती तथा खिचड़ी प्रसाद वितरण का आयोजन किया जाएगा। इस संबंध में मंदिर प्रबंधक दिलीप पाठक ने जानकारी दी कि कार्यक्रम की शुरूआत शाम 8:30 बजे से भजन संध्या के साथ होगी, जिसमें स्थानीय एवं बाहर से आए भजन गायक अपनी प्रस्तुति देंगे। इसके उपरांत रात्रि 10:00 बजे बाबा की महाआरती तथा श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरण किया जाएगा। श्री पाठक ने बताया कि यह आयोजन बीते कई वर्षों से प्रत्येक पूर्णिमा को भक्तों के सहयोग से निरंतर संपन्न होता आ रहा है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं से इस पुण्य अवसर पर सपरिवार उपस्थित होने की अपील की है। मंदिर प्रबंधक श्री पाठक ने फोनपे/गूगलपे नंबर 9934531724 साझा किया है, जिसके माध्यम से इच्छुक श्रद्धालु कार्यक्रम के लिए सहयोग राशि भेज सकते हैं।

देवघर के कृष्णा सिंह यादव को गिरिडीह का सह-निर्वाचित पदाधिकारी नियुक्त

देवघर। झारखंड प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के राज्य निर्वाचन पदाधिकारी गिरधारी गोप ने पत्र जारी कर प्रदेश के 24 जिलों में वर्ष 2025-28 के लिए संगठनात्मक चुनाव कराने हेतु पदाधिकारियों की घोषणा की है। इसी क्रम में देवघर निवासी कृष्णा सिंह यादव को गिरिडीह जिला का सह-निर्वाचन पदाधिकारी नियुक्त किया गया है। अपनी नियुक्ति पर कृष्ण सिंह यादव ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव, बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव, झारखंड प्रभारी जय प्रकाश नारायण यादव, झारखंड राजद के प्रदेश अध्यक्ष संजय सिंह यादव, झारखंड सरकार के कैबिनेट मंत्री संजय प्रसाद यादव, पूर्व मंत्री सुरेश पासवान तथा राज्य निर्वाचन पदाधिकारी गिरधारी गोप के प्रति आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि पार्टी ने उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी है, उसे वे पूर्ण ईमानदारी और निष्ठा के साथ निभाएंगे तथा झारखंड में पार्टी को और अधिक सशक्त एवं सक्रिय बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

देवघर में दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम संपन्न, डीएवी के शिक्षकों ने सीखे जीवन कौशल

देवघर। गीता देवी डीएवी पब्लिक स्कूल, भंडारकोला में सीबीएसई पटना द्वारा आयोजित दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम शनिवार को सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस प्रशिक्षण सत्र में विद्यालय के 120 शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य विषय था लाइफ स्किल जीवन कौशल। प्रशिक्षण सत्र में हिमांशु शेखर पांडे, आकाश कुमार, उमा शंकर सिंह एवं अवंतिका आनंद ने शिक्षकों को जीवन कौशल के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। कार्यक्रम के दौरान समूह चर्चा, हैंडआउट गीत, पेंटिंग जैसी कई रचनात्मक गतिविधियों की प्रस्तुति की गई, जिससे शिक्षकों को विषयवस्तु को व्यावहारिक रूप से समझने का अवसर मिला। विद्यालय के प्राचार्य सह प्रशिक्षण समन्वयक बलराम कुमार झा ने सभी प्रतिभागी शिक्षकों को संबोधित करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण से प्राप्त ज्ञान को वे अपने शिक्षण कौशल के विकास में लगाएं, ताकि कक्षा में शिक्षा और भी प्रभावशाली बन सके।

शहीदों की आत्मा की शांति के लिए बाबा मंदिर प्रांगण में तीर्थपुरोहितों द्वारा किया गया पूजा हवन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक 11 मई 2025 को बाबा बैद्यनाथ धाम देवघर झारखंड के तीर्थ पुरोहित चंद्रशेखर खवाड़े के नेतृत्व में मां भारती के वीर सपूतों की शहादत को नमन करते हुए उनकी आत्मा की शांति हेतु तथा मां भारती को सुरक्षित रखने वाले सैनिकों की स्वास्थ्य रक्षा के लिए आज बाबा बैद्यनाथ जी के मनोकामना लिंग पर जलार्पण व पूजन करने के बाद यहां के पंडितों द्वारा एक विशेष हवन का आयोजन आचार्य ललन द्वारि के देख रेख में संपन्न हुआ। जिसमें यहां के सभी तीर्थ पुरोहितों और मंदिर में उपस्थित अन्य अन्य प्रदेशों से आए हुए भक्तों द्वारा आहुति अर्पित कर भारतीय सेना के शौर्य को बढ़ाने और शहीद सैनिकों की आत्मा की शांति के लिए बाबा बैद्यनाथ जी,माता पार्वती से प्रार्थना किया गया । कार्यक्रम का नेतृत्व कर रहे चंद्रशेखर खवाड़े ने बताया कि बाबा बैद्यनाथ धाम के तीर्थ पुरोहित हमेशा देश भक्ति की भावना से ओतप्रोत रहते हुए देश की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले देश की सेना और ऐसे देशभक्त शासको के हित के लिए बाबा बैद्यनाथ जी से हमेशा प्रार्थना करते रहती है । देश में चल रहे भारत पाकिस्तान के बीच तनाव में पाकिस्तान के द्वारा सीजफायर का उल्लंघन कर भारत पर लगातार हमला करने की कोशिश को भारतीय सेना के द्वारा संयम और साहस के साथ पाकिस्तान को मुंहतोड जवाब दिया जा रहा है। भारतीय सैनिको के सम्मान उनके शौर्य को और अधिक संबलता हासिल हो इसी कामना के साथ बाबा मंदिर में हवन पुजन का आयोजन किया गया है। बाबा बैद्यनाथ जी सभी सैनिकों को सुरक्षित और स्वस्थ रखें तथा हमारे सैनिकों की शौर्य गाथा दुनिया के सभी देशों में गई जाए ऐसा संबल हमारे सैनिकों को बाबा बैद्यनाथ की प्रदान करें । पहलगाम हमले के बाद भारत द्वारा की गई जवाबी कार्यवाही में पाकिस्तान की ओर से की जाने वाली गोलाबारी से बने युद्ध के माहौल में शहीद हुए हमारे सैनिकों की आत्मा की शांति के लिए आज बाबा बैद्यनाथ जी के मनोकामना लिंग पर जलार्पण ,पूजन तथा हवन किया गया। हम हमेशा धर्म की जय और अधर्म का नाश के पक्षधर तथा विश्व कल्याण के समर्थक है ।बाबा बैद्यनाथ विश्व की शांति हेतु हमारी प्रार्थना को स्वीकार करें।

गोह थाना का निरीक्षण, विधि-व्यवस्था की समीक्षा की गई

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह (औरंगाबाद) गोह थाना परिसर में शनिवार को निरीक्षण पदाधिकारी रामजी प्रसाद ने औचक निरीक्षण कर थाना की विधि-व्यवस्था, अभिलेख संधारण, लंबित कांडों की स्थिति एवं साफ-सफाई आदि का जायजा लिया ।निरीक्षण के दौरान थानाध्यक्ष मो. इरसाद, एसआई रवींद्र कुमार, एएसआई शिवपूजन यादव सहित कई पुलिस पदाधिकारी एवं कर्मी मौजूद रहे। निरीक्षण पदाधिकारी ने थाना में लंबित मामलों के निष्पादन में तेजी लाने, आमजन से संवाद बढ़ाने एवं अपराध नियंत्रण को प्राथमिकता देने के निर्देश दिए। साथ ही थाना परिसर की साफ-सफाई एवं रिकॉर्ड संधारण की भी सराहना की। उन्होंने पुलिस पदाधिकारियों से बेहतर जनसंपर्क और गश्ती को नियमित बनाए रखने की अपील की ताकि क्षेत्र में शांति और सुरक्षा बनी रहे।

लक्ष्य कॉन्वेंट स्कूल झुमरी तिलैया में मदर्स डे पर कार्यक्रम का आयोजन

झुमरी तिलैया विजय यादव

मदर्स डे के अवसर पर लक्ष्य कॉन्वेंट स्कूल, झुमरी तिलैया में एक हृदयस्पर्शी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यार्थियों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से मातृत्व को नमन किया। कार्यक्रम में बच्चों ने कविता, नृत्य और भावनात्मक संदेशों के जरिए मां की ममता, त्याग और बलिदान को दशार्या। इस अवसर पर झुमरी तिलैया नगर परिषद के निवर्तमान अध्यक्ष एवं लक्ष्य कॉन्वेंट स्कूल के संस्थापक संतोष यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि मातृशक्ति सबसे बड़ी शक्ति है, मां से बढ़कर कोई देवी नहीं होती। मां का कर्ज कोई चुका नहीं पाया है। मां ही बच्चे की पहली शिक्षक होती है। बैंक ऑफ इंडिया के शाखा प्रबंधक दिलीप मजूमदार, वार्ड नंबर 11 के निवर्तमान पार्षद बसंत सिंह, तथा वार्ड नंबर 2 की पार्षद आशा देवी भी विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए और बच्चों की प्रस्तुतियों की सराहना की। कार्यक्रम में बच्चों के अभिभावकगण एवं विद्यालय के शिक्षक झ अनुपमा यादव, अंजू कुमारी, प्रेम कुमार, ऋषभ कुमार, विश्वजीत कुमार, रिया सिंह, ममता कुमारी, शीतल कुमारी, मलका शेख, आरुषी कुमारी, पूनम कुमारी झ तथा अभिभावकों में जानकी गोप, दिलीप यादव, नितेश कुमार, आलम और बबीता कुमारी प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिसर में भावुकता, सम्मान और उत्साह का माहौल देखने को मिला। सभी ने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि बच्चों में बचपन से ही मां के प्रति सम्मान की भावना जागृत करना अत्यंत आवश्यक है।

भारतीय जनता युवा मोर्चा के अध्यक्ष शशांक राज का देवघर के कार्यकताओं ने किया स्वागत

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक 11/05/2025 को भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष शशांक राज का देवघर स्थानीय परिसदन में भाजयुमो ज़िलाध्यक्ष आशीष दूबे के नेतृत्व में युवा मोर्चा कार्यकताओं द्वारा भव्य स्वागत किया गया गया , स्वागतोप्रांत उन्होंने बाबा बैधनाथ मंदिर में कार्यकताओं के साथ पूजा अर्चना कर संगठन की मजबूती और झारखंड की खुशहाली की कामना की ।साथ ही उन्होंने आरोप लगाया कि झारखंड की हेमंत सरकार युवाओं के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है. उन्होंने युवा मोर्चा के सदस्यों से सरकार के हर गलत निर्णय का विरोध करने की अपील की. साथ ही संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने पर भी जोर दिया. उन्होंने कहां की वर्तमान सरकार राज्य के युवाओं को ठग रही है ,आम जनता में निराशा घर कर गई है ,पूरा झारखण्ड पानी की समस्या से जूझ रहा है । इस दौरान विभिन्न मुद्दों पर गहन चिंतन भी हुआ. भाजयुमो द्वारा चलाये गये जिले में विभिन्न कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी. बैठक में मुख्य रूप से संगठन के आगामी कार्यक्रमों पर चर्चा की गयी. युवाओं को संगठन से जोड़ने की भी रणनीति तय की गयी । शशांक राज ने कहा कि हेमन्त सरकार के नेतृत्व में राज्य की भोली भाली जनता घोर निराशा में जीने के लिए मजबूर हो गई है ।मौके पर भाजयुमो ज़िलाध्यक्ष आशीष दूबे,सीएन दुबे,संजय गुप्ता,राहुल चौधरी,लखन मंडल,नीरज मंडल,अमित कुमार,अभय सिंह, मनोज सिंह सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे ।।

पूर्व आईपीएस शिवदीप लांडे के सम्मान में आयोजित हुआ एक दिवसीय फुटबाल मैच

एकदिवसीय मैच में फुल्का ने धरहरा 2 - 0 किया पराजित

निलेश कुमार को दिया गया बेस्ट 22 का पुरस्कार।

रंजीत विद्यार्थी

मुंगेर : पूर्व आईपीएस सह हिन्द सेना के राष्ट्रीय अध्यक्ष शिवदीप लांडे के सम्मान में एकदिवसीय फुटबॉल मैच का आयोजन फूलका मैदान में आयोजित हुआ। आयोजित मैच शंकर स्पोर्टिंग क्लब धरहरा एवं स्पोर्टिंग क्लब फुल्का के बीच खेला गया। खेले गए मैच में पहला गोल फूलका टीम की ओर से मैच के 30 वे मिनट में जर्सी नंबर 16 के अनुज कुमार ने किया। वही दूसरा गोल-फुल्का टीम की ओर से 40 मिनट में जर्सी नंबर 12 के निलेश कुमार ने कर मैच में 2 - 0 से बढ़त बना दिया। वही जवाबी गोल करने को लेकर धरहरा की टीम मैदान में संघर्ष करते देखी गई पर मैच के समाप्ति तक कोई गोल नहीं कर सके। इस तरह फुल्का ने धरहरा 2 - 0 पराजित कर मैच को जीत लिया। मैच में बेहतर प्रदर्शन करने वाले निलेश कुमार को बेस्ट 22 का पुरस्कार दिया गया। मैच में रेफरी की भूमिका रंजीत कुमार, सुधांशु कुमार, रामरक्षा, नीतीश कुमार ने पूरा किया वहीं उद्घोषक की भूमिका में पूर्व खिलाड़ी अजीत कुमार ने अपने निराले अंदाज से खिलाड़ियों एवं खेल प्रेमियों को उत्साहित किया इसके पहले मैच के मुख्य अतिथि शिवदीप दोनों टीम के खिलाड़ियों से परिचय पत्र प्राप्त कर उनका अफजाई करते हुए बेहतर प्रदर्शन करने की शुभकामना देते हुए विजेता एवं उपयोगिता टीम पुरस्कार देते हुए फुल्का के खेल प्रेमियों के प्रति आभार जताया। मुख्य अतिथि ने विशेष तौर पर पुराने खेल प्रेमी अजीत कुमार मनोज कुमार कृष्णानंद प्रवीण शंकर, उमेश सिंह शिवलाल रजक के प्रति आभार जताते हुए कहा कि खेल का माहौल को जिंदा रखने में जो भूमिका आज आप लोग निभा रहे हैं. इसको आगे बढ़ाने के लिए युवाओं को आगे आने की जरूरत है, तभी समाज में हर तरह का बदलाव दिखेगा। मौके पर विनय यादव, संजय यादव, संजय सिंह, कन्हैया ताती, राजकुमार साहित सैकड़ो खेल प्रेमी मौजूद थे।

चित्रांजलि कलाकार समूह ने रचा कला का नया अध्याय

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

देवघर:- भारतीय कला जगत में एक नई ऊर्जा और सृजनात्मकता का संचार करते हुए चित्रांजलि कलाकार समूह ने अपने विशिष्ट कला कार्यों से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। यह समूह विभिन्न पृष्ठभूमियों से आए युवा एवं प्रतिभाशाली कलाकारों का संगठित मंच है, जो भारतीय संस्कृतिक विरासत एवं आधुनिक कला का सुंदर समन्वय प्रस्तुत कर रहे हैं। समूह में प्रमुख रूप से मधुमिता दासगुप्ता, प्रेम, माधव शर्मा, सुंदरम, आस्था, प्राची, आयुष, राजवीर और सत्यम जैसे समर्पित कलाकार शामिल हैं। इन सभी कलाकारों की शैली, विषय-वस्तु और रंगों के प्रयोग में विविधता और गहराई देखने को मिलती है। चित्रांजलि का उद्देश्य केवल चित्रकला तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मंच कलाकारों को विचारों की अभिव्यक्ति, सामाजिक सरोकारों की प्रस्तुति और सांस्कृतिक संवाद के लिए भी प्रोत्साहित करता है। आने वाले महीनों में यह समूह देश के विभिन्न शहरों में अपनी कला प्रदर्शनियों का आयोजन करेगा। चित्रांजलि समूह की यह पहल भारतीय कला जगत के लिए एक सकारात्मक संकेत है, जो युवा कलाकारों को प्रोत्साहित करने और कला को जन-जन तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

संदीपनी पब्लिक स्कूल ने मनाया मातृ दिवस

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

झौसागड़ी दुखी साह रोड स्थित संदीपनी पब्लिक स्कूल में मदर्स डे के उपलक्ष्य में एक भव्य व भावनात्मक कार्यक्रम का आयोजन वायोरे वैंकेस हॉल में किया गया। यह विशेष आयोजन मातृत्व के सम्मान में समर्पित था, जिसमें देवघर शहर की दर्जनों विशेष व्यक्तित्व वाली महिलाओं ने अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई। विशिष्ट अतिथि के रूप में महिला थाना की थाना प्रभारी बीना हांसदा ने सिरकत की। अन्य विशिष्ट अतिथियों में समाज सेवी रीता चौरसिया, डॉक्टर के. पल्लवी, भारत विकास परिषद की सचिव कंचन शेखर, सत्संग कॉलेज की प्राचार्य नीलिमा सिन्हा, इनरविह्ल क्लब सी. जी. आर साि-रका साह, प्रेसिडेंट अर्चना भगत, रौनियार वैश्य समाज की अध्यक्ष लाजवंती गुप्ता, उपसचिव पायल गुप्ता, किडविज प्ले स्कूल की निर्देशिका ज्ञानी मिश्रा शामिल हुई। सामूहिक दीप प्रज्वलन और गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कार्यक्रम को तीन भागों में विभाजित किया गया था। प्रथम सत्र बच्चों को समर्पित था, जिसमें उन्होंने नृत्य, कविता, गायन एवं नाट्य रूपांतरण जैसी सुंदर प्रस्तुतियों से उपस्थित माताओ का मन मोह लिया। बच्चों की मासूमियत और प्रतिभा ने पूरे माहौल को उल्लासमय बना दिया। द्वितीय सत्र माताओं के लिए आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं रखी गईं गई थी जैसे फोल्डिंग सारीज, सैरीगेटिंग पल्सेस, वेयरिंग पेपर नेकलेस, गेस द सॉन्ग, गेस द मूवी, कप बैलेंसिंग आदि । माताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपनी प्रतिभा का सुंदर प्रदर्शन किया और इनाम भी जीते।'. तीसरे सत्र में मदर कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया जिसमें मदर यूनिवर्स,मदर अर्थ, मदर वर्ल्ड और 'मल्टीटैलेंटेड मदर' जैसे खिताबों से उन्हें नवाजा गया। विजयी प्रतिभागियों को पुष्प गुच्छ,मुकुट और उपहार देकर सम्मानित किया गया, जिससे उनकी रचनात्मकता और आत्मबल को एक नई पहचान मिली । कार्यक्रम के पश्चात सभी अतिथियों और माता ने सुस्वादी स्नैक्स का लुफ्त उठाया कार्यक्रम के अंत में विद्यालय की प्राचार्य ने सभी शिक्षिकाओं, माताओ, अतिथियों, अभिभावकों, प्रतिभागियों एवं सहायकों को कार्यक्रम के सफल आयोजन में योगदान देने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया। यह आयोजन न केवल मातृत्व के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का माध्यम बना, बल्कि बच्चों और अभिभावकों के बीच आत्मीय संबंधों को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में भी एक प्रभावी प्रयास सिद्ध हुआ।

संक्षिप्त समाचार

डीएवी भंडारकोला में मातृ दिवस मनाया गया

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

गीता देवी डीएवी पब्लिक स्कूल भंडारकोला में मातृ दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हर साल मई महीने के दूसरे र-विवार को मनाया जाने वाला मातृ दिवस अपनी माँ को जो कि हमें जन्म देने वाली एवं जीवन की पहली गुरु है तथा प्रेम, समर्पण और त्याग की प्रतिमूर्ति है, को सम्मानित करने के उद्देश्य से मनाया जाता है। इस अवसर पर विद्यालय में इंटर हाउस गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। क्लास III से V, VI से VII और VIII से XII के कुल तीन समूहों में प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। दयानंद हाउस,अरविंदो हाउस, वि-वेकानंद हाउस और श्रद्धानंद हाउस के कुल 52 प्रतियोगियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। गायन प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका में आदित्य चटर्जी और प्रियव्रत मजूमदार मौजूद थे।सबों ने माँ से संबंधित सुमधुर गीत की प्रस्तुति की। विद्यालय के प्राचार्य बलराम कुमार झा ने कहा कि सभी बच्चे माँ के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए अपनी माँ को उपहार,शुभकामनाएँ और प्यार जरूर दें। उन्होंने यह भी कहा कि मातृ दिवस का उद्देश्य केवल एक दिन माँ को सम्मान देना नहीं है, बल्कि यह याद दिलाना है कि माँ का स्थान जीवन में सबसे ऊँचा है।

प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ के द्वारा नटराज स्कूल ऑफ आर्ट के बच्चों की ली गई परीक्षा

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

आज दिनांक 11 /5/2025 को नटराज स्कूल ऑफ आर्ट वेद टीचिंग संस्थान में प्राचीन कला केंद्र चंडीगढ़ के द्वारा क्रियात्मक पर-ीक्षा की शुरूआत हुई जिसमें चंडीगढ़ से आए हुए परीक्षक मनोज चटर्जी के द्वारा क्रियात्मक परीक्षा लिया गया जिसमें गायन, वादन तबला ,कथक ,नृत्य तथा ड्राइंग की परीक्षा ली गई सभी विषयों के बच्चों ने अपने संबंधित विषय पर अपना सर्वोत्तम दिया, और बेहतर प्राप्तांक की उम्मीद कर रहे हैं। कुल 52 परीक्षार्थी ने भाग लिया नटराज स्कूल ऑफ आर्ट्स वेद टीचिंग संस्थान की निर्देशिका डॉक्टर रीता ठाकुर ने बच्चों को शुभकामनाएँ दी और कहा कि किसी भी तरह के परीक्षा को खूब इंजॉय करना चाहिए यह हम में निखार लाता है, यह भी कहा कि कला के क्षेत्र में बच्चे आगे बढ़े ताकि हमारे संस्थान के बच्चे देवघर ही नहीं बल्कि देश-विदेश में अपना नाम रोशन कर सके इस इसी संकल्प को लेकर नटराज संस्थान काम कर रही है । इस क्रियात्मक परीक्षा में नटराजा के शिक्षक गायन में विश्वमय चक्रवर्ती, तबला में सुनील कुमार विश्वकर्मा , कत्थक में संजीव परिहस्त तथा तबला में हरि शंकर बर्मन ड्राइंग में कुंदन पंडित का सहयोग रहा इस क्रियात्मक परीक्षा में रिंकू ठाकुर तथा विजया सिंह का भी विशेष सहयोग रहा ।

बारुण प्रखंड के पिपरा में अष्टभुजी महोत्सव सारी तैयारियां पूर्ण

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले के बारुण प्रखंड में स्थित मशहूर ग्राम पिपरा में अवस्थित प्रसिद्ध शक्ति स्थल अष्टभुजी माता मंदिर के प्रांगण में 12 मई को आयोजित होने वाली अष्टभुजी महोत्सव के निमित्त महत्वपूर्ण बैठक हुई। 12 मई को आयोजित होने वाले महोत्सव के लिए तैयारी की समीक्षा की गई समीक्षोपरांत सभी कार्यक्रम संतोषजनक पाए गए। आयोजन समिति के अध्यक्ष विजय कुमार सिंह के नेतृत्व में आयोजित बैठक का संचालन उपाध्यक्ष अजय कुमार द्वारा किया गया तैयारी से संबंधित प्रतिवेदन सचिव राजा दिलीप सिंह ने पेश किया।महोत्सव के दिन सुबह सवेरे अष्टभुजी माता की विशेष पूजा की जाएगी विद्यालयी बच्चों का कार्यक्रम आयोजित किया गया है।अपराह्न में महोत्सव का विधिवत उद्घाटन किया जाएगा जिसमें स्थानीय सभी जनप्रतिनिधियों ने अपनी आने की अनुमति दे दी है। जिले के विभिन्न महोत्सव के सक्रिय सदस्यों का सम्मान समारोह के बाद विशिष्ट कलाकारों का स-ांस्कृतिक कार्यक्रम एवं कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। अष्टभुजी माता के महिमा एवं गरिमा को देश दुनिया में प्रचारित प्रसारित करने वास्ते स्थल को पर्यटन स्थल का दर्जा दिलाने के लिए महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। विंध्यवासिनी माता के प्रतिकृति के रूप में यहां अष्टभुजी मंदिर स्थापित है जो सैकड़ो गांव के कुलदेवी के रूप में पूजी जाती हैं। आज के बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में में एंटी करप्शन ब्यूरो के राष्ट्रीय अधिकारी आदित्य श्रीवास्तव की गरिमामई उपस्थिति रही। उन्होंने महोत्सव के आयोजन पर अपनी प्रसन्नता जाहिर की।आयोजन समिति के संरक्षक पत्रकार अजीत मिश्रा,संयोजक सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि सारे कार्यक्रमों की रूपरेखा तय कर ली गई है।

मुंगेर में बोले शिवदीप लांडे, 60 लाख शिक्षित बेरोजगार युवाओ को नही मिल रही नौकरीयां

बिहार के 243 सीटों पर लड़ेंगी राष्ट्रीय हिंद सेना पार्टी विस चुनाव

दो दिवसीय दौरे पर मुंगेर पहुंचे पूर्व आईपीएस अधिकारी शिवदीप लांडे

रंजीत कुमार विद्यार्थी

मुंगेर : अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान मुंगेर पहुँचे पूर्व आईपीएस व हिन्द सेना चीफ शिवदीप लांडे ने कहा युवा जिस दिन वो सोच लें बिहार बदल जायेगा,निश्चित रूप से बिहार बदल जाएगा. क्योंकि इनमे हैं अपार संभावनाएं. मुंगेर से अपने विशेष लगाव के कारण पूर्व आईपीएस व हिन्द सेना चीफ शि-ावदीप लांडे शनिवार (11 मई) को मुंगेर जिला पहुँचे। दौरे की शुरूआत नंदलाल बसु चौक स्थित नंदलाल बसु की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया। चौक पर पूर्व से ही सैकड़ों युवा ढोल नगाड़ों के साथ शिवदीप लांडे के स्वागत को तैयार थें। वहाँ से पदयात्रा करते हुए अम्बेडकर चौक स्थित भीम राव अम्बेडकर के आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। अम्बेडकर चौक से खड़गपुर हाट बाजार पदयात्रा करते हुए माड़वारी तोला स्थित एक होटल में जन संवाद कार्यक्रम को सबोधित किया। भीषण गर्मी में भी अपने चहेते सुपर कॉर्प को सड़क पर देखते ही लोगो मे खासकर यु-वाओं में एक विशेष उत्साह देखा जा रहा है। हुजूम श्री लांडे जी के पीछे चल पड़ा। सैकड़ो युवा शि-ावदीप लांडे से हाथ मिलाने,सेल्फी लेने की होड़ होड़ में दिखे। 02 दिवसीय इस कार्यक्रम के दौरान वह स्थानीय लोगों से मिलते नजर आए,लांडे के साथ भारी संख्या में उनके समर्थक भी मौजूद थे। इस दौरे का उद्देश्य स्थानीय लोगो से सीधा संवाद,उनकी समस्याओं को जानना और जमीनी हकीकत से रूबरू होना है। अपने समर्थकों के साथ पदयात्रा करते हुए श्री लांडे मारवाड़ी टोला स्थित एक होटल में जनसंवाद कार्यक्रम को संबोधन किया। जनसंवाद कार्यक्रम के दौरान श्री लांडे ने मुंगेर में हुए अपने पहले पोस्टिंग वाले दिनों को याद किया। लोगो को सरकारी तंत्र में फैले भ्रष्टाचार से कैसे निबटे इसके

लिए कई तरीके भी बताए। उसके बाद पूर्व आईपीएस ने प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। आयोजित प्रेस वार्ता सम्मेलन में मीडिया को संबोधित करते हुए शिवदीप लांडे ने कहा कि 60 लाख शिक्षित बेरोजगार युवको में पास नौकरी नही है। व्यापार के विकल्प नही होने साथ इंडस्ट्री नही होने के प्राइवेट नौकरियां भी नही हैं ये सभी यहाँ की गंभीर समस्याएं हैं। हम आगामी विधानसभा चुनाव में तमाम 243 सीटों पर मजबूती से चुनाव लड़ेंगे। हमे अच्छे युवाओ को राजनीति में लाना है बिहार को बदलना है। मेरा जन्म भले ही बिहार में नहीं हुआ हो लेकिन बिहार हमेशा मेरे लिए कर्मभूमि रही है। बिहार में काफी संभावनाएं हैं लेकिन ये आज भी पिछड़ा राज्य है। बेरोजगारी व पलायन यहां की एक गंभीर समस्या है। बिहार की सेवा और विकास के लिए मैं सड़क पर हूँ और हर जाति वर्ग के लोगो का अपार स्नेह मिल रहा है जिसे पा कर अभिभूत हूँ। लोगो को हिन्द सेना से काफी उम्मीदें जग रही हैं भारी तादाद में हमे लोगों के संदेश भी मिल रहे हैं और वे उनकी पार्टी से जुड़ना चाह रहे हैं। हमने अपने आधिकारिक फेसबुक पेज पर पार्टी के सदस्य बनने के लिए एक फॉर्म भी जारी किया है वहाँ से आप आसानी से हिन्द सेना के संस्थापक सदस्य बन सकते हैं। हिन्द सेना के मुखिया शिवदीप लांडे फुल्का मैदान में आयोजित फुटवाल मैच में बतौर अतिथि शिरकत कर पुरुस्कार वितरण किया व युवाओ को संदेश दिया। युवाओ को दिए अपने संबोधन में माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री शिवदीप लांडे ने कहा खेल हमे शारिरिक व मानसिक तौर पर स्वस्थ रखता है। हम स्वस्थ होंगे तभी समाज व देश के विषय मे सका-रात्मक परिकल्पना कर पायेंगे। धरहरा बनाम फुल्का के बीच फुटबॉल मैच काफी रोमांचल रहा।

अपने संबोधन में शिवदीप लांडे ने आगे कहा कि अधिक से अधिक युवा राजनीति में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें। बिहार को बदलने में युवाओं की ऊर्जा सबसे ज्यादा सहायक होगी। बिहार के युवाओ में एक गजब सी ऊर्जा है और ये कुछ भी कर सकते हैं। लेकिन रोजगार नही होने में कारण यहाँ पलायन व बेरोजगारी एक गंभीर समस्याएं हैं अगर इसपे काबू नही किया गया तो बहुत जल्द बिहार बूढों का राज्य बन कर रह जायेगा। सूबे में युवाओ के लिए बेरोजगारी के साथ महिलाओं व बुजुर्गों के लिए भी जीवन बहुत कठिन है। कई गावों तक बुनियादी सुविधाएं अभी तक नही पहुचीं हैं। करोड़ो रुपये की योजनाओं के बावजूद साफ पानी व समुचित बिजली हर जगह नही पहुच पाई है। शिक्षा की स्थित बदतर होने साथ स्वास्थ्य की बुनियादी सुविधाएं नदारद हैं। हिन्द सेना राष्ट्रवाद, सेवा और समर्पण के सिद्धांतों पर कार्य करेगी। बिहार की सेवा और विकास ही हमारा प्रथम और आखिरी लक्ष्य है।

बेगूसराय में दोस्त ने हीं दोस्त की गला रेतकर कर दी हत्या, आक्रोशित लोगों ने सड़क जाम कर काटा बवाल

हत्या की वजह का खुलासा नहीं हो सका है. लाइब्रेरी की छत पर युवक का शव मिला.

गणादेश ब्यूरो

बेगूसराय (मुंगेर) : मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत बेगूसराय जिला में दोस्तों ने ही युवक को मार डाला, लाइब्रेरी की छत पर गला रेतकर हत्या कर दी. घटना से आकर्षित लोगों ने सड़क जामकर रोष पूर्ण प्रदर्शन किया. घटना के कारणों का पता भी नहीं चल पाया है. पुलिस मामले की छानबीन कर रही है. बताते चले की ,बेगूसराय के बरौनी के गढ़हरा थाना क्षेत्र अंतर्गत नगर परिषद बीहट के वार्ड- 12 में हाजीपुर पोखर के पास पुस्तकालय भवन की छत पर शनिवार की रात विशेश्वर साह के 23 वर्षीय पुत्र राणा कुमार की तेज हथियार से गला रेत कर निर्मम हत्या कर दी गयी। घटनास्थल पर पेप्सी कोड

ड्रिंक्स की बोतल, डिस्पोजल ग्लास, बेल्ट, गमछा समेत अन्य खाने पीने बिखरा हुआ सामान पाया गया। आशंका जताई जाती है कि कुछ मित्रों ने ही साजिश के तहत उसकी हत्या कर दी। परिजनों को घटना की जानकारी मिलते ही कोहराम मच गया।

सुबह करीब छह बजे ही आक्रोशित लोगों ने

बरौनी-जीरोमाइल मुख्य सड़क जाम कर दी। सूचना पाकर गढ़हरा थानाध्यक्ष सुमंत चौधरी दल बल के साथ घटना स्थल पर पहुंच मामले का जायजा लिया।इस दौरान सदर डीएसपी टू इमरान अहमद,बरौनी इंस्पेक्टर रंजन कुमार ठाकुर, जीरोमाइल इंस्पेक्टर राजेश कुमार, जीरोमाइल थानाध्यक्ष चंद्रकांत कुमार,एसआई जितेंद्र कुमार, मो आलम गिरि समेत बड़ी संख्या में पुलिस बल मौजूद हुए। घटना के बाद लोग एसपी के आने की मांग पर डटे थे। साथ ही, हत्यारों की तुरंत गिरफ्तार करने की मांग पर अड़े थे। वहीं समाजसेवी पार्षद अधिवक्ता चंदन कुमार, संजीव प्रसाद सिंह, हरि कुमार, मिंटू कुमार, राम प्रकाश महतो, माणिक चंद्र महतो, श्यामदेव चौधरी आदि के प्रयास से करीब 04 घंटे से लगे जाम को हटाया गया। इसके बाद आवागमन सामान्य हुआ।

भाजपा नेता राकेश सिंह के भतीजी के शादी में नेता और अधिकारी पहुंचे

पटना , । भाजपा नेता राकेश सिंह के बड़े भाई अरविंद सिंह की पुत्री की शादी में कई बड़े बड़े अधिकारी और नेता का आने जाने का लगा रहा ताता पूर्व केंद्रीय मंत्री साहनवाज हुसैन बिहार सरकार मंत्री मंटू सिंह भाजपा बिहार झारखण्ड संघठन प्रभारी नागेंद्र भाई साहब आरएसएस सुबहेदार साहब विधायक केदार सिंह विधायक डॉ सीएन गुप्ता विधायक छोटेलाल राय जिला उपाध्यक्ष प्रियंका सिंह युवा नेता सुधीर सिंह प्रमुख प्रतिनिधि राजन राय उप प्रमुख रंजीत राय प्रमुख प्रतिनिधि पशुपति साह विनोद सम्राट विजय लाला बबलू सिंह मुखिया प्रतिनिधि अजीत सिंह राहुल सिंह छोटू ओझा किशोर सिंह हरी सहनी विजय नारायण सिंह अजय मांझी सहित अनेक लोगो का आगमन देर रात्री तक आने जाने का लगा रहा सभी लोगो ने वर वधु को शुभकामनाएँ दिया इस अवसर पर गाड़ी का काफिला देर रात्री तक लगा रहा इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष मंटू बाबा रामानंद सिंह सुमंत तिवारी मोनू सिंह संतोष शर्मा अजय नाथ पूरी मुखिया प्रतिनिधि विक्रम सिंह अमरेंद्र सिंह प्रमोद सिंह जीतेन्द्र गिरी मुखिया सुधीर अकेला सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

बिहार के लाल मोहम्मद इम्तियाज ने पाकिस्तान से लड़ते हुए दी शहादत

भाजपा नेता राकेश सिंह ने शाहिद के परिजनों से मिलकर दी सांत्वना

पटना । भारत और पाकिस्तान के बीच छपरा के एक और लाल ने देश की रक्षा में दी शहादत।10 मई, 2025 को पाकिस्तान ने बिना किसी उकसावे के गोलीबारी शुरू कर दी। छपरा के मोहम्मद इम्तियाज बीएसएफ में एसआई के पद पर कार्यरत थे ।वे एस के पूरा सेक्टर कश्मीर में बॉर्डर पर प्रतिनियुक्त थे। उनका पैत्रिक आवास सारण जिले के गरखा प्रखंड अतर्गत नारायण पुर गाँव मे स्थित है ।ज्ञात हो कि मोहम्मद इम्तियाज तीन भाई थे। जिसमें वह सबसे बड़े थे और सेवा में 1987 में भर्ती हुए थे। इन्हें चार बच्चे हैं दो लड़का और दो लड़की। उनके तीन बच्चों की शादी अपने जीवन काल में ही कर चुके हैं। ज्ञात हो कि उनके दूसरा भाई मोहम्मद गुलाम मुस्तफा 1994 में बीएसएफ में भर्ती हुए थे ।तीसरा भाई सऊदी अरब में मोहम्मद असलम रहते हैं। उनके पिता बहुत ही मेहनतकश इंसान हैं। जैसे ही इस बात की जानकारी भाजपा नेताओं को हुई डॉक्टर नजरे इमाम जिला

अध्यक्ष भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा, संजय कुमार सिंह जिला प्रवक्ता भाजपा, राकेश कुमार सिंह भाजपा नेता सह सांसद प्रतिनिधि,राहुल पासवान भाजपा नेता, अजय माँझी ,नीरज कुमार सिंह ,संतोष सिंह, दीपु सिंह, रितेश राय,पवन सिंह, विवेक शर्मा,सुभाष राम, मनोज पटेल के साथ हाल-चाल जाना । वहीं दूरभाष पर सांसद राजीव प्रताप रूडी ने उनके भाई गुलाम मुस्तफा से बात कर ढांढ़स बंधाय और हर संभव मदद देने की बात कही है।

विश्व मातृ दिवस पर महिलाओं के उत्थान को लेकर लिया संकल्प

मुंगेर। विश्व महिला दिवस पर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से यदुवंश संगठन की एक आवश्यक बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता यदुवंश समाज के प्रबुद्ध संघ के अध्यक्ष महेंद्र यादव तथा संचालन पवन यादव ने किया। बैठक का संयोजन मुंगेर एवं भागलपुर प्रमंडल के प्रभारी सुरेश यादव तथा सह-संयोजन शिक्षक अजय कुमार यादव कर रहे थे। मातृशक्ति का नेतृत्व संयुक्त रूप से महिला यदुवंश नेत्री बिंदा यादव, संगीता यादव एवं पूजा यादव ने किया। इस दौरान मातृशक्ति को समर्पित संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रदेश, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने की दिशा में महिलाओं के उत्थान, महिलाओं के सशक्त विकास, महिला शिक्षा, महिलाओं को रोजगार से जोड़ने तथा परिवार में महिलाओं की प्रधानता पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया। महिला सशक्तिकरण पर चर्चा करते हुए यदुवंश समाज का नेतृत्व कर रहे अभिषेक यादव, संजीत यादव, चंद्रमा प्रसाद उर्फ चंदन यादव एवं चौधरी पवन यादव ने कहा कि वर्तमान परिदृश्य में महिलाओं को समझ में सशक्त भूमिका में लाने की दिशा में पुरुषों को अपने घर से प्रयास करने की जरूरत है। इसके लिए महिलाओं को सर्वप्रथम शिक्षा से जोड़कर उन्हें रोजगार की दिशा में प्रशिक्षण देकर रोजगार मुहैया करने पर हर संभव प्रयास करने की जरूरत है। यदुवंश समाज इस दिशा में अथक प्रयास कर रहा है। यदुवंश समाज के वरिष्ठ पदाधिकारी महेंद्र यादव, अजय यादव एवं सुरेश यादव ने कहा कि हमें अपने समाज में महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे लाकर उन्हें उचित सम्मान दिलाने के लिए प्रयत्नशील होना होगा। हम एक सभ्य तथा सशक्त समाज की परिकल्पना तभी कर सकते हैं जब उसे समाज में महिलाओं की भागी-दारी अहम होगी। सत्यजीत यादव एवं दीपक यादव ने कहा कि महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, महिला उत्पीड़न जैसी सामाजिक कुरीति पर रोक लगाने की आवश्यकता है। बिंदा यादव, संगीता यादव एवं पूजा यादव ने कहा कि हम महिलाओं को पुरुषों की तरह समान अवसर मिले तो हम महिलाएं भी किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से काम नहीं होगी। परंतु समाज में महिलाओं को हर क्षेत्र में पीछे रखा जाता है। जहां महिलाओं को मौका मिलता है, वहां अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने में चूकती नहीं है।

एसडीपीओ द्वारा मासिक अपराध नियंत्रण गोष्ठी की बैठक की गई

साहिबगंज: राजमहल अनुमंडल क्षेत्र के सभी थाना प्रभारी व पुलिस निरीक्षकों के साथ एसडीपीओ विमलेश त्रिपाठी की अध्यक्षता में मासि-ाक अपराध नियंत्रण गोष्ठी आयोजित की गई। मासिक अपराध नियंत्रण गोष्ठी में बीते माह के लंबित मामलों की समीक्षा की गई। इस दौरान सभी थाना प्रभारीयो से थाना में दर्ज केस से संबंधित जानकारी ली गई। वहीं मामलों के त्वरित निष्पादन को लेकर उपस्थित पुलिस पदाधिकारी को कई आवश्यक निर्देश दिए गए।

भारत ने हमला नहीं, जवाबी कार्रवाई की है

>> विचार

दिलचस्प यह है कि पाकिस्तान के इन हमलों को निष्फल करने वाली आकाश मिसाइल को भारत की अपनी स्वदेशी कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने बनाया है। भारत ने उनके तीन सैनिक ठिकाने जहां तबाह किए हैं, वहीं उसको लगातार जवाब दिया जा रहा है। भारत को अपने षडयंत्र का निशाना बनाने वाले भारतीय मूल के आसिफ मुनीर लगातार हालात को बिगाड़ने की कोशिश में लगे हैं। सुनने में भले ही अजूबा लगे, भारत के खिलाफ आतंकी युद्ध के पीछे भारत से पाकिस्तान गए लोगों का ही हाथ रहा...ठीक 26 साल पहले पाकिस्तान ने सियाचिन इलाके में घुसपैठ के जरिए हम पर करगिल का युद्ध थोप दिया था।

उमेश चतुर्वेदी

भारत ने काफी सावधानी से इन स्थलों को चुना और मिसाइल एवं ड्रोन के जरिए निशाना बनाया। भारत की कोशिश यह रही कि उसकी कार्रवाई की जद में सामान्य नागरिक ना आएं। लेकिन पाकिस्तान ने इसे खुद पर हमला माना। चाहे दुश्मन की हों, या अपनी, सेनाएं हमेशा चौकस रहती हैं। ऐसे में छह और सात मई की दरमियानी रात भारतीय सेनाएं जिस तरह पाकिस्तान और उसके कब्जे वाले कश्मीर की नौ जगहों पर सफल निशाना साधने में कामयाब रहीं, उससे पाकिस्तान की सेना, उसकी चौकसी और चीन से खरीदे उसके चौकसी वाले तंत्र पर सवाल उठता है। भारत ने यह कार्रवाई पहलगाम में 22 अप्रैल को बहे बेगुनाह खूनों के जवाब में किया। भारत के खबरिया टीवी चैनल अक्सर ही जल्दबाजी में रहते हैं। उनके यहां सोच-विचार की प्रक्रिया की गुंजाइश कम है। शायद यही वजह है कि भारतीय कार्रवाई को उन्होंने पाकिस्तान पर हमला बताने में देर नहीं लगाई। लेकिन यह ध्यान रखने की बात है कि हमला एक तरह से युद्ध की शुरुआत होता। इस लिहाज से देखें तो भारत ने जवाबी कार्रवाई की है, हमला नहीं। क्योंकि भारत ने अपनी तरफ से शुरूआत नहीं की है। इसमें दो राय नहीं कि पहलगाम में बहाए गए बेगुनाह खूनों के चलते देश में गुस्से की लहर थी। पहलगाम में आतंकियों ने जिन 26 बेगुनाह लोगों का खून बहाया, उनमें एक नेपाली नागरिक भी था। हैरत की बात यह है कि इन बेगुनाहों खून बहाते वक्त आतंकियों ने बाकायदा उनसे नाम पूछा, उन्हें कुरान की आयत और कलमा पढ़ने को बोला। यहां तक कि उनके वस्त्र उतारकर उनके अंदरूनी अंगों को देखा और हिंदू होने की तसल्ली होते ही बिना वजह गोलियों सो उड़ा दिया। उसमें दो ऐसी महिलाएं विधवा हुईं, जिनके माथे पर कुछ ही दिनों पहले सिंदूर का तेज शामिल हुआ था। आतंकियों ने धर्म के नाम पर इन महिलाओं का सुहाग उजाड़कर सिर्फ इन महिलाओं और उनके परिवारों को सूना ही नहीं किया, बल्कि भारतीय सहनशक्ति को चुनौती दे दी। भारत में गुस्से की लहर उड़ना स्वाभाविक था। बिहार के मधुबनी में एक सभा में प्रधानमंत्री

मोदी का कहना कि सुहाग उजाड़ने वाले आतंकियों का पीछा करके उन्हें खोजकर मिट्टी में मिला दिया जाएगा, उस गुस्से की ही अभिव्यक्ति थी। उसी अभिव्यक्ति को भारतीय सेनाओं ने बीती छह और सात मई की आधी रात को एक बजकर पांच मिनट से डेढ़ बजे के बीच जमीनी हकीकत बना दिया। इस हमले में पाकिस्तान के बहावलपुर स्थित मौलाना मसूद अजहर का केंद्र भी रहा, जिसने थोक के भाव से आतंकियों को पैदा किया और भारत निर्यात किया है। जिसमें 26 नवंबर 2008 को मुंबई को खून से लाल कर देने वाले अजमल कसाब और उसका षडयंत्र रचने वाले रिचर्ड हेडली भी शामिल थे। भारत ने काफी सावधानी से इन स्थलों को चुना और मिसाइल एवं ड्रोन के जरिए निशाना बनाया। भारत की कोशिश यह रही कि उसकी कार्रवाई की जद में सामान्य नागरिक ना आएं। लेकिन पाकिस्तान ने इसे खुद पर हमला माना। दिलचस्प यह है कि उसने आतंकी ठिकानों को नागरिक ठिकाने बताना शुरू किया। इसके साथ ही उसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सामने यह भी बताना तेज कर दिया कि भारत ने मासूमों को निशाना बनाया है। फिर उसने आतंकवादी कार्रवाई पर साझा जांच का प्रस्ताव रखा। लेकिन अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इसे स्वीकार नहीं किया है। पाकिस्तान एक तरफ जहां खुद को प्रताड़ित बता रहा है, वहीं वह सात-आठ मई की रात से लगातार भारतीय क्षेत्रों में हमला कर रहा है। दुखद बात यह है कि वह खुद भारतीय क्षेत्र में नागरिक ठिकानों और घरों को निशाना बना रहा है। कश्मीर सीमा पर पुंछ में उसने एक गुरूद्वारे पर हमला किया, जिसमें रागी समेत चार लोगों की मौत हो गई। पाकिस्तान लगातार भारत के सैनिक ठिकानो पर हमला कर रहा है। इन पंक्तियों के लिखे जाने तक वह तकरीबन पूरी पश्चिमी सीमा पर मिसाइल, मोर्टार, ड्रोन और हवाई हमले कर चुका है। उसने चंडीगढ़, जैसलमेर, बाड़मेर, उरी, अखनूर, पहलगाम, जम्मू, लेह, सर क्रीक, भुज समेत तमाम सैनिक ठिकानों पर निशाना साधने की कोशिश कर चुका है। यह बात और है कि भारत की जवाबी कार्रवाई में उसके तकरीबन सभी प्रयास नाकाम कर दिए गए। दिलचस्प यह है कि पाकिस्तान के इन हमलों को निष्फल करने वाली आकाश मिसाइल को भारत की अपनी स्वदेशी कंपनी भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड ने बनाया है। भारत ने उनके तीन सैनिक ठिकाने जहां तबाह किए हैं, वहीं उसको लगातार जवाब दिया जा रहा है। भारत को अपने षडयंत्र का निशाना बनाने वाले भारतीय मूल के आसिफ मुनीर लगातार हालात को बिगाड़ने की कोशिश में लगे हैं। सुनने में भले ही अजूबा लगे, भारत के खिलाफ आतंकी युद्ध के पीछे भारत से पाकिस्तान गए लोगों का ही हाथ रहा...ठीक 26 साल पहले पाकिस्तान ने सियाचिन इलाके में घुसपैठ के जरिए हम पर करगिल का युद्ध थोप दिया था.. उस युद्ध के पीछे जनरल परवेज मुशर्रफ का हाथ था..पाकिस्तान जाने से पहले परवेज का परिवार दिल्ली के चांदनी चौक में रहता था..पहलगाम की नृशंस आतंकी कार्रवाई का षडयंत्र किस्तान के जनरल आसिफ मुनीर ने रचा। यहां जानना जरूरी है कि आसिफ का परिवार भी भारत से पाकिस्तान गया था..बंटवारे से पहले आसिफ का परिवार जालंधर में रहता था.. भारत की जवाबी कार्रवाई से पाकिस्तान लगातार मुंह की खा रहा है। इसके बावजूद वह दुष्प्रचार के जरिए अपनी डींगे हांक रहा है। पाकिस्तान अपने लोगों को लगातार बता रहा है कि उसकी सेनाओं ने भारत की सेना या वायुसेना को इतना नुकसान पहुंचाया। जबकि उसके ये दावे कोरे झूठ हैं। इस लिहाज से देखें तो भारत दो मोर्चों पर जूझ रहा है..पहला मोर्चा जहां सैनिक है, वहीं दूसरा मोर्चा सूचनाओं का है..अरब क्रांति के दौरान देवता के रूप में उभरा सोशल मीडिया अब देवता और दैत्य-दोनों ही भूमिकाओं में है..पाकिस्तान इन दिनों सोशल मीडिया की दैत्य वाली भूमिका का खूब उपयोग करते हुए भारत के बारे में लगातार गलत सूचनाएं दे रहा है..अपनी सेनाओं की झूठी कामयाबियों को इसी के जरिए वह फैला रहा है। भारत पर आरोप लगा रहा है कि भारतीय सेनाएं रिहायशी इलाकों और धार्मिक स्थानों पर हमला कर रही हैं.लेकिन यह गलत है और भारत का सार्वजनिक सूचना तंत्र और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय लगातार इन भ्रामक सूचनाओं को तथ्यों के साथ खारिज कर रहे हैं और पाकिस्तान के झूठ को बेपर्दा कर रहे हैं। वैसे यह दुनिया का जाना-पहचाना तथ्य है कि सीधी लड़ाई में नाकाम रहने वाले ही फर्जी खबरों का सहारा लेते हैं। सीधा युद्ध जो नहीं कर सकता, वही शेखी भी बघारता है। पाकिस्तान के दुष्प्रचार को इसी नजरिए से देखा जाना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि भारत ने ज्यादातर पाकिस्तानी आतंकी उत्पाद कें द्रों और रक्षा कें द्रों को निशाना बनाया है। एक तरह से देखें तो भारत इस बार आतंक की फैक्ट्रियों के खात्मे को लेकर दृढ़ संकल्प नजर आ रहा है। दूसरी तरफ पाकिस्तान ड्रोन और मिसाइलों से हमला कर रहा है और फिर उससे इनकार भी कर रहा है। इससे उसका डर भी जाहिर हो रहा है। भारत में यह मानने वालों की संख्या कम नहीं है कि पाकिस्तान का यह डर और बढ़ाया जाना चाहिए। पता नहीं यही वजह है या नहीं, लेकिन भारत की जवाबी कार्रवाई एक तरह से उसके डर को ही बढ़ाने की कोशिश कर रही है। जिन देशों की आर्थिक स्थिति खराब होती है, वे युद्ध जैसी विभीषिका से बचने की कोशिश करते हैं। लेकिन पाकिस्तान की स्थिति दूसरी है। दरअसल वहां सरकार दुनिया को दिखाने का एक चेहरा भर है। शाहबाज शरीफ भले ही पाकिस्तान के प्रधानमंत्री हों, लेकिन असल ताकत वहां सेना प्रमुख आसिफ मुनीर के हाथ है। पाकिस्तान में कह सकते हैं कि सरकार में सेना घुसी हुई है। इसे दुनिया भी स्वीकार कर रही है। अमेरिकी विदेश मंत्री मार्क रूबियो का आसिफ मुनीर को फोन करना और युद्ध रोकने की बात करना सरकार में सेना के घुसी होने का ही सबूत है। पाकिस्तान की सेना एक तरह से सेना प्रमुख की लिमिटेड कंपनी होती है। सेना का रोजगार युद्ध और आतंक की सप्लाई से चलता है, इसीलिए पाकिस्तान की तरफ से आसिफ मुनीर इस युद्ध को जारी रखे हुए है। लेकिन उन्हें याद रखना होगा कि जिस तरह 1948, 1965, 1971 और 1999 में भारत ने पाकिस्तान को धूल चटाया, 1971 में बांग्लादेश को अलग कराया, अगर वह नहीं सुधरा तो इस बार भारत बड़ा सबक सिखाएगा। कुछ पश्चिमी राजनीतिक जानकार तो कहने भी लगे हैं कि पाकिस्तान दरअसल प्रसव पीड़ा से गुजर रहा है और हो सकता है कि इस बार उसकी कोख से बलूचिस्तान का जन्म हो जाए। इसलिए पाकिस्तान को चेतना होगा। अगर वह नहीं चेतेगा तो भारतीय सेनाएं इस बार उसे ऐसा सबक सिखाएंगी कि वह लंबे समय तो उसे भूल नहीं पाएगा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से मिली 1.4 अरब डालर की रकम हिचकोले खाती उसकी अर्थव्यवस्था को हल्का सा सहारा ही दे सकती है,लंबे समय तक उसे ढो नहीं सकती।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और राजनीतिक समीक्षक हैं..)

संपादकीय

दोपहिया वाहनों की बिक्री बढ़ी

पूरे देश में सड़कों का जाल तैयार हो गया है। 2023-24 में देश के अंदर में हर दिन 33 किलोमीटर से अधिक नेशनल हाइवे का निर्माण हुआ है। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक 2023-24 में कुल 12349 किलोमीटर नेशनल हाइवे बने हैं। सड़क परिवहन मंत्रालय की महत्वाकांक्षी योजना है कि वह हर दिन 100 किलोमीटर हाइवे बनाए। इससे भारत अमेरिका को टक्कर देने की स्थिति में पहुंच जाएगा। देश में सड़कें तेजी से बन रही हैं और इस कारण से वाहनों की बिक्री भी बढ़ रही है। अब कहीं भी सड़क मार्ग से जाना आसान होता जा रहा है। देश की राजधानी दिल्ली से यहां की वित्तीय राजधानी मुंबई तक पहले कारों से लोग नहीं जाया करते थे। उसमें 24 घंटे तक की थका देने वाली यात्रा करनी होती थी, लेकिन अब यह 1350 किलोमीटर की दूरी महज 12 घंटे में की जा सकती है। इस तरह की कई सड़कें बन गई हैं जिनसे अपने गंतव्य पर पहुंचने में अब आधा समय लगता है और कम ईंधन फुंकता है। इससे सड़क परिवहन को बढ़ावा मिला है और वाहनों की बिक्री भी बढ़ी है। देश में इलेक्ट्रिक कारों का उत्पादन भी बढ़ रहा है। विदेशी कंपनियों के अलावा भारतीय कंपनियां टाटा और महिंद्रा के अलावा दो पहिया बनाने वाली कई कंपनियां इलेक्ट्रिक वाहन बनाने लगी हैं। भारत में बनी कारें चीनी कार बावायडी या फिर इलोन मस्क की टेस्ला से काफी सस्ती है। इस वजह से इनकी बिक्री भी खूब बढ़ रही है। भारत में काम कर रही अन्य कार निर्माता कंपनियां जैसे मारुति, हुंडई, एमजी वगैरह भी इलेक्ट्रिक कारें बना रही हैं। इससे इसके बाजार में विस्तार हुआ है और लोगों में दिलचस्पी बढ़ी है। फिलहाल परंपरागत कारों के साथ-साथ इन कारों की बिक्री भी बढ़ रही है। सबसे बड़ी बात है कि इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों की बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। खेती से दोपहिया वाहनों की भी बिक्री बढ़ी है।

युद्धविराम हो गया, बोलना है तो गोदी-मोदी भाषा बोलो !

विष्णु नागर

ऑपरेशन सिंदूर' जब तक चल रहा था, तब तक सरकार जो भी कहे, उसे सुनना और मानना जरूरी था। इधर-उधर झांकना मना था। संदेह नहीं करना मना था। जो सरकार ने नहीं कहा, उसे सुनना मना था। हां सरकार का लाडला गोदी मीडिया इसका अपवाद पहले भी था, तब भी था। वह सरकार के असली मन की असली बात पहले भी बोलता था, ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भी बोलता रहा। उसे सब माफ़ था।ये विदेश सचिव और रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता तो सरकारी भाषा में बड़े संभल-संभल कर, बहुत तौल-तौल कर बोलते थे। उतना बोलते थे, जितना कि बोलना चाहिए। एक शब्द न कम, न एक अधिक मगर यह मोदी जी की कार्यशैली के विरुद्ध था। उनकी मन की बात के खिलाफ था। उनकी नीतियों और कार्यशैली का खुला अपमान था पर क्या करें, तब वक्त की मजबूरी थी। सहना पड़ रहा था। ये मोदी-गोदी की भाषा नहीं बोलते थे। इनके अलावा कोई कुछ भी कहे, सच हो तो भी उसे झूठ मानना था। कोई कहे कि भारत का एक फ्रांस से खरीदा रफाएल विमान गिरा दिया गया है तो इसे हरगिज़ सच नहीं मानना था। इसे दुश्मन द्वारा फैलाई गई अफवाह मान कर चलना था।सरकार ने फोर पीएम, द वायर और पुण्य प्रसून वाजपेयी के यूट्यूब चैनल पर रोक लगा दी थी क्योंकि ये मोदी की गोदी में कभी नहीं लेटे। इनको ऐसे संस्कार ही नहीं मिले थे। आठ हजार ट्विटर एकाउंट भी इसीलिए बंद किए गए थे कि हो सकता है, उनमें सच का कुछ अंश हो! युद्धविराम हो गया है मगर जुबान की तालाबंदी जारी रहेगी। बोलना है तो गोदी-मोदी भाषा बोलो वरना चुप रहो !युद्धविराम से पहले हमें कुछ नहीं बोलना था, कुछ नहीं देखना था और कुछ नहीं सोचना था और कुछ नहीं करना था। यह सारा भार सरकार ने उठा रखा था, जिसे विपक्ष ने इसका लाइसेंस दे दिया था, फिर भी बीजेपी इससे खुश नहीं थी। उसकी आईटी सेल दुख के भार से दबी थी। फिर भी उस सरकार का साथ

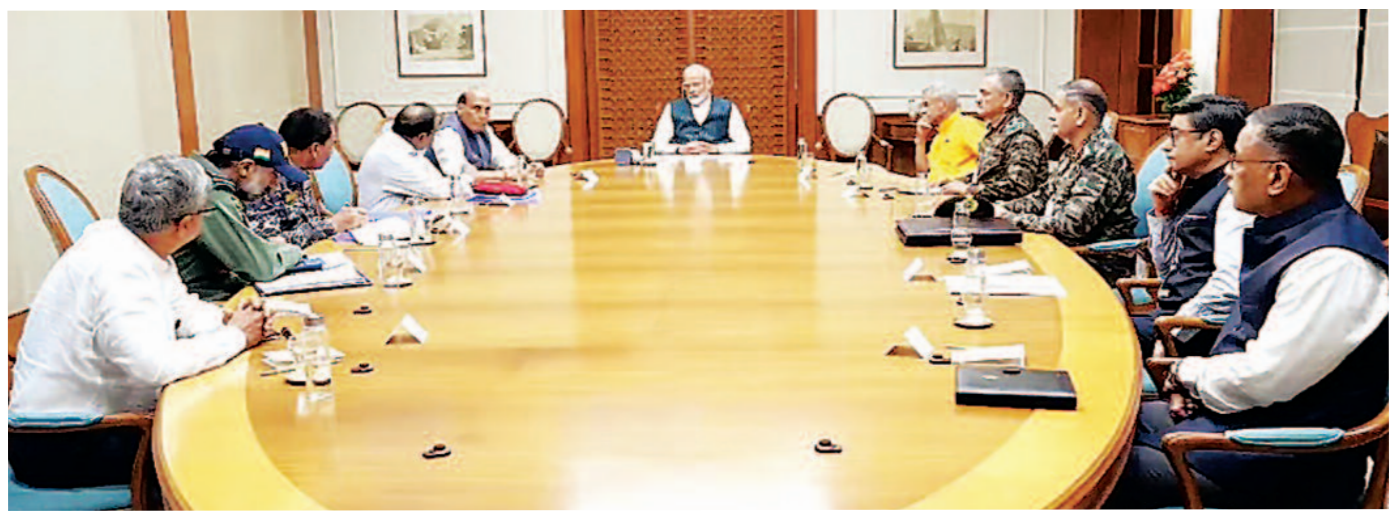

देना था, जिसे हम कल तक बात-बात पर गरियाते थे, झूठा कहते थे।उसे ही सच्चा मानना पड़ रहा था, देश का असली हितचिंतक स्वीकार करना पड़ रहा था। उससे कोई प्रश्न भूल से भी नहीं करना था। वैसे भी प्रश्न करने के लिए यह सरकार कभी उपलब्ध नहीं रही। उससे जितना चाहो, आत्मप्रचार करवा लो, इसमें उसका जवाब नहीं मगर सवालों का जवाब वह नहीं देती ! यह मोदी-सिद्धांत के विरुद्ध है !

व्यंग्य

वही बोलना था, वही सुनना था, वही और उतना ही पढ़ना था, जितना प्रधानमंत्री जी चाहते थे।वही देखना था, जो गृहमंत्री जी दिखाना चाहते थे। वही महसूस करना था, जो रक्षा मंत्री जी महसूस करवाना चाहते थे। अपने दिल-दिमाग को ताक पर रखकर भूल जाना था। उस पर धूल पड़ जाए तो उसे साफ नहीं करना था। दुखी नहीं होना था। कल तक हिंदू सबसे अधिक असुरक्षित थे, अब अत्यंत सुरक्षित होने लगे थे कि ऑपरेशन सिंदूर विदा हो गया। अब फिर से हिंदू 'असुरक्षित' होने लगेगा और मुसलमान फिर से 'सुरक्षित' हो जाएंगे।ऑपरेशन सिंदूर के समय गोदी मीडिया जो कहे, उसका मंडन न? कर सको तो खंडन भी नहीं करना था। वह भारत की वीरता के प्रदर्शन के लिए अफगानिस्तान, लेबनान, सीरिया की तबाही के मंजर के विडियो और फोटो परोसता तो उसे भी हमारे साहस और शौर्य का प्रमाण मान कर खुश रहना था। वे कहें पांच घंटे में पूरा पाकिस्तान खत्म, तो खत्म। वे कहें आज पाकिस्तान की आखिरी रात है, तो उसे वाकई आखिरी रात मान लेने में भला था।वे कहें लाहौर पर तिरंगा फहरा दिया तो फहरा दिया। वे कहें कि कराची भारत के क़ब्ज़े में आ चुका तो इसे कराची के क की क़ब्ज़े के क से अनोखी तुक मिलाने का शाब्दिक खेल समझने की भूल नहीं करना था। वे कहते कि इस्लामाबाद फतह तो मान लेना था कि फतह हो गया, हमने आधा पाकिस्तान जीत लिया तो जीत लिया। अब यह नशा हिरन हो गया है। जिन्होंने इसकी खुशी मनाई, मिठाई बांटी, डीजे बजाए, नाचे-कूदे- मोदी जी की जय बोली। यह खेल खत्म हो गया। इस शैली में खत्म हो गया, दूसरी शैली में जारी रहेगा। मोदी जी की दुंदुभी अब और जोर से बजेगी।और अंबानी जी आदि 'ऑपरेशन सिंदूर' को अपनी टीवी नेटवर्क का ट्रेडमार्क बनाने के लिए दौड़ पड़े थे तो इस पर टिप्पणी नहीं करना था। इसका बुरा नहीं मानना था। यह नहीं कहना था कि शव नोचने के लिए गिद्ध आ गए। इन्हें मौत और संकट में भी बिजनेस सूझता है। उनकी तारीफ़ करना था कि वे कितने देशभक्त हैं कि ऊपर से इशारा मिला कि अभी नहीं, थोड़ा रुककर आपका काम हो जाएगा तो तुरंत वे इस दौड़ से पीछे हटकर देशभक्त बन गए ! ऑपरेशन सिंदूर चल रहा था मगर प्रधानमंत्री के पास एक के बाद दूसरी सर्वदलीय बैठक की अध्यक्षता करने के लिए भी समय नहीं था। मगर तब इस पर प्रश्न उठाना मना था। तब यह नहीं पूछना था कि उनके पास इसके लिए समय नहीं है तो फिर किसके लिए समय है? क्या इससे भी जरूरी कुछ है? क्या बिहार में चुनाव प्रचार करना उससे अधिक आवश्यक था? क्या गोदी चैनल के कार्यक्रम में जाकर वहां के एंकर-एंकरानियों के साथ फोटो खिंचवाना और विडियो बनवाना देश के लिए जरूरी था? तब इस तरह सोचना भी राष्ट्रद्रोह था, पाकिस्तान की भाषा बोलना था। 'द वायर' हो जाना था !यह तो प्रधानमंत्री की मेहरबानी थी कि वह पहलगाम पर आतंकी हमले की खबर सुनकर सऊदी अरब से फौरन लौट आए। न आते तो कोई उनका क्या कर लेता? और इसी बीच उन्हें फिर ऋएशिया, नार्वे और हालैंड जाना था पर वे नहीं गए। तीन-तीन देशों की यात्रा का बलिदान उन्होंने देश के लिए उस समय किया। आप बताइए कि आज अगर जवाहरलाल नेहरू या इंदिरा गांधी या राजीव गांधी प्रधानमंत्री होते तो ऐसा त्याग कर पाते? उनमें देश के लिए ऐसा जज्बा था? भक्त कहेंगे, नहीं था।और सुनिए अगर ऑपरेशन सिंदूर लंबा खिंच जाता, युद्ध में बदल जाता और व्यापारी जम कर लूटने लगते तो भी उस समय चूं भी करना देशद्रोह माना जाता। उस समय व्यापारियों और ग्राहकों के बीच एकता बेहद जरूरी मानी जाती। अगर वे लूटते तो इसके लिए भी लोगों को अपने को दोषी मानना था, न कि लुटेरों को !बहरहाल युद्धविराम घोषित हुआ है, मगर विपक्ष और सरकार के बीच युद्धविराम लागू नहीं है। हिंदू-मुसलमान करने पर युद्धविराम लागू नहीं है। यह युद्ध चलता रहेगा। झूठ के कारखाने में उत्पादन होता रहेगा। पटरी से उतरा देश, पटरी से उतरा रहेगा।

प्रतिभाशाली बच्चों के भविष्य से खिलवाड़

पंकज श्रीवास्तव

तमाम सख्त उपायों के बावजूद प्रतिष्ठित नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट (नीट) में बैठने वाले अभ्यर्थियों का भरोसा टूटने का काम फिर हो गया। भारतीय प्रतिभावान विद्यार्थियों के लिए होने वाली स्तरीय परीक्षाओं में से एक 'नीट' लापरवाही के दलदल से बाहर नहीं निकल पाई है। गत चार मई को सम्पन्न हुई इस परीक्षा में राजस्थान में जयपुर, बिहार में समस्तीपुर और अन्य स्थानों पर डमी परीक्षार्थियों के पकड़े जाने की घटनाएं बताती हैं कि स्वास्थ्य सेवाओं में जाने के इच्छुक बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ करने वाली ये घटनाएं रोकी नहीं जा सकी हैं। कमजोर अभ्यर्थी की जगह स्कोरर के इस परीक्षा में बैठने के मामले जहां नहीं खुल पाते वहां कमजोर छात्र भी दाखिले की सीढ़ी तक पहुंच ही जाता है। मेडिकल पाठ्यक्रमों में प्रवेश की चाह रखने वाले लाखों अभ्यर्थियों का भरोसा तोडने के लिए ऐसी इक्का-दुक्का घटनाएं ही काफी होती हैं। ये मामले तो तब सामने आए हैं जब परीक्षा देने गए बच्चों को कड़ी सुरक्षा जांच के बीच प्रवेश दिया गया। अभिभावक बच्चों के सकुशल परीक्षा देकर आने की उम्मीद में परीक्षा केन्द्रों के बाहर घंटों कड़ी धूप में खड़े रहने को मजबूर भी हुए। कुछ को आधार कार्ड के चक्कर में दौड़ लगाते देखा गया। हर बार की तरह अभिभावकों ने जांच की इस सख्त व्यवस्था पर रोष भी व्यक्त किया। ईमानदार प्रतिभागियों और उनके अभिभावकों को भरोसा था कि अब इस परीक्षा में किसी किस्म की लापरवाही की गुंजाइश नहीं है। परीक्षा में 'मुन्ना भाइयों' के शामिल होने के समाचार अखबारों की सुर्खियों में छाए रहे। एक तरह से वही तरीका जो पिछले सालों से इस परीक्षा के प्रति भरोसा तोड़ता रहा है वह फिर देखा गया। जब कभी एवजी परीक्षार्थियों को बैठाने वाला गिरोह पकड़ा जाता है तो डमी परीक्षार्थी के रूप में बैठने वाले किसी प्रतिभाशाली का भविष्य भी चौपट हो जाता है। चंद रकम के लालच में दलालों के झांसे में आकर ऐसे प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी डमी छात्र के रूप में परीक्षा देने पहुंच जाते हैं। चिंता इस बात की भी है कि इस सब प्रक्रिया के सूत्रधार दलालों का कुछ नहीं बिगड़ता। पकड़े जाने पर थोड़ी-बहुत सजा हो भी गई तो सजा पूरी कर ये फिर नए स्थान और नए नाम से सक्रिय हो जाते हैं। भविष्य अंधकारमय तो उन प्रतिभाशाली विद्यार्थी का होता है, जिनका हक मारकर कोई अन्य मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लेने में कामयाब हो जाता है। सवाल ये है कि चाक-चौबंद व्यवस्थाओं में भी सेंध कैसे लग जाती है? फेस वैरिफिकेशन, बायोमैट्रिक्स का सत्यापन, आधार कार्ड की जांच, प्रवेश पत्र के फोटो से मिलान आदि कितने ही उपाय कैसे फेल हो जाते हैं? सीधी-सी बात है कि जिम्मेदार ही लापरवाही बरत रहे हैं। ऐसे मामले सामने आते भी हैं तो आरोपी बचाव की गलियां भी निकाल लेते हैं। दलाली के खेल लम्बी-चौड़ी बिसात पर होते हैं। परीक्षाओं की पवित्रता खत्म करने वाले पूरे कुनबे को सख्त सजा देने का काम होना चाहिए, ताकि भरोसा कायम रहे।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक , प्रकाशक व संपादक सरोज चौधरी द्वारा न्यू लोक भारती प्रेस, वार्ड 10 कोकर औद्योगिक क्षेत्र कोकर रांची से मुद्रित तथा ई -37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित, संस्थापक संपादक :स्व. राधाकृष्ण चौधरी
प्रबंध संपादक : अरूण कुमार चौधरी, फोन: 9471170557/08084674042, ई-मेल : Divyadinkarranchi @ gmail.com,RNI Regd. No. : JHAHIN/2013/54373Postal Registration No. : RN-11/2012)

संक्षिप्त समाचार

बुद्धा आश्रम संस्था के द्वारा वृद्धाश्रम संचालन कमेटी का किया गठन

मुंगेर। बुद्धा आश्रम संस्था के तत्वावधान में रविवार को छोटी केशोपुर में एक आवश्यक बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता सामाजिक कार्यकर्ता मयंक राज उर्फ छोटू डॉन ने किया। बैठक में सामाजिक स्तर पर विभिन्न सामाजिक कार्यों को संचालित करने की दिशा में चर्चा की गई। इस दौरान सर्वसम्मति से स्थानीय स्तर पर जरूरतमंद वयोवृद्ध लोगों को शरण देने के उद्देश्य से वृद्धाश्रम विकसित किए जाने को लेकर निर्णय लिया गया। वृद्धाश्रम को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए और कमेटी तथा महिला कमेटी का गठन किया गया। महिला कमेटी के रूप में एससी एसटी महिला प्रकोष्ठ की जिला अध्यक्ष साधना देवी को जिम्मेदारी सौंपी गई। मयंक राज उर्फ छोटू डॉन को जमालपुर प्रखंड अध्यक्ष, अमझर कोल काली निवासी मंगल कुमार को प्रखंड सचिव, शिवम कुमार को प्रखंड कोषाध्यक्ष, बनाया गया। इस बैठक में कोर कमेटी के सदस्य के रूप में राजीव कुमार, सुधीर कुमार, रोहित कुमार, अमित रंजन को जिम्मेदारी दी गई। बैठक में बुद्ध आश्रम संस्था का डायरेक्टर गोविंद कुमार भी उपस्थित थे।

मेडिकल कैंप लगाकर करीब 200 मरीज का किया गया मुफ्त इलाज

जमालपुर। श्री श्री आनंदमूर्ति जी के जन्मोत्सव आनंद पूर्णिमा के 104 वीं जन्मोत्सव के उपलक्ष में 72 घंटे का अखंड कीर्तन 9 मई से अनवरत चल रहा है जो 12 मई को सुबह 5:45 में में संपन्न होगी। रविवार को वलीपुर जागृति में एकदिवसीय मेडिकल कैंप किया गया। जिसमें ब्लड टेस्ट कैंप किया गया और होम्योपैथी चिकित्सा और एलोपैथिक चिकित्सा भी किया गया। जिसमें करीब 200 पेशेंट को लाभ हुआ। ब्लड टेस्ट कैंप में रिलीफ सेक्रेटरी इंद्रदेव कुमार, पैथोलॉजिस्ट कुंदन जी और डॉक्टर प्रिंस कुमार डॉ अखिलेश कुमार और स्टाफगण अन्य लोग शामिल थे। सभी रोगी का उचित रूप से चेकअप हुआ। ब्लड प्रेशर,शुगर, कोलेस्ट्रॉल, कैल्सियम वगैरह और सबका रक्त लिया गया। जिसका रिपोर्ट सभी को मंगलवार को दिया जाएगा। आनंद मार्ग प्रचारक संघ केवल इनडोर प्रोग्राम ही नहीं बल्कि आउटडोर प्रोग्राम भी करते हैं और समाज के निम्न वर्ग तक पहुंचने का प्रयास करते हैं। इनका प्रयास है कि समाज के निचले स्तर तक ज्यादा से ज्यादा लाभ पहुंचाया जा सके और उनको रिलीफ दिया जा सके। मेडिकल कैंप का सफल संचालन के लिए डायसिस सचिव आचार्य सद्विरानंद अवधूत दादा, केंद्रीय जनसंपर्क सचिव आचार्य कल्याणमित्रानंद अवधूत जी और भूक्ति प्रधान रणजीत कुमार जी, रमेश जी, राजेश जी, ब्रजेश जी, विवेकजी और उनके समिति के सभी लोग क्रियाशील रहे और बताया गया कि आगे भी इस प्रकार का आयोजन बार-बार किया जाएगा और समाज के निचले स्तर तक रिलीफ दिया जा सकेगा।

सीबीएसई रीजनल ऑफिस,पटना के तत्वावधान में दो दिवसीय कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यशाला का डीएवी, भण्डारकोला में आयोजन

देवघर से दिव्य दिनकर संवाददाता प्रेम रंजन झा

गीता देवी डीएवी पब्लिक स्कूल भंडारकोला में सीबीएसई पटना द्वारा आयोजित दो दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आज सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में डीएवी भंडारकोला के 120 शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का मुख्य विषय था लाइफ स्किल। इसमें विद्यालय के शिक्षकों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रशिक्षक हिमांशु शेखर पांडे, आकाश कुमार,उमा शंकर सिंह और अवंतिका आनंद ने रलाइफ स्किलर के हर पहलू से शिक्षकों को अवगत कराया ।कार्यक्रम में शिक्षकों के द्वारा समूह परिचर्चा,हैंड आउट गीत,पेंटिंग आदि गतिविधियों की भी प्रस्तुति की गई । कार्यक्रम काफी ज्ञानवर्धक रहा ।कार्यक्रम में विद्यालय के प्राचार्य सह प्रशिक्षण समन्वयक बलराम कुमार झा ने शिक्षकों को प्रशिक्षण प्राप्त कर इसका सीधा लाभ अपने शिक्षण कौशल वर्धन में लगाने की अपील की।

गोह में करंट लगने से महिला की मौत, पुलिस ने ऋछ टीम के साथ की जांच

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद) (गोह) गोह थाना क्षेत्र के असेयास गांव में शनिवार को करंट लगने से एक 40 वर्षीय महिला की दर्दनाक मौत हो गई। मृतका की पहचान असेयास गांव निवासी स्व कृष्णा यादव की पत्नी आरती कुंवर के रूप में की गई है। घटना की सूचना मिलते ही गोह थानाध्यक्ष के नेतृत्व में पुलिस टीम ने त्वरित रूप से मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण करते हुए आस-पास के ग्रामीणों के बयान दर्ज किए। पुलिस के अनुसार, मामले की गंभीरता को देखते हुए एफएसएल (ऋछ) टीम को बुलाया गया, जो घटनास्थल से वैज्ञानिक साक्ष्य संकलन का कार्य कर रही है। घटनास्थल पर पंचनामा की प्रक्रिया पूरी करने के बाद शव को अंत्य परीक्षण के लिए सदर अस्पताल, औरंगाबाद भेजा गया है। थानाध्यक्ष मो इरसाद ने बताया की पुलिस मामले में अग्रतर विधिसम्मत कार्रवाई की जा रही है और हर पहलू से जांच जारी है। विदेशी शराब के साथ एक तस्कर गिरफ्तार, टेम्पो भी जब्त गोह (औरंगाबाद) अवैध शराब के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बंदेया पुलिस को एक बड़ी सफलता मिली है। कार्रवाई के दौरान पुलिस ने 0.375 लीटर विदेशी शराब के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है, साथ ही शराब की ढुलाई में प्रयुक्त एक टेम्पो को भी जब्त किया गया है। बंदेया थानाध्यक्ष सूरज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि कांड संख्या- 48/25 के तहत थानाक्षेत्र के साव बिगहा गांव निवासी सुरेन्द्र यादव को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी अवैध रूप से शराब की तस्करी कर रहा था।

औधोगिक विकास के लिए तरस रही धरहरा, अन्यत्र पलायन कर रहे मजदूर

धरहरा में नही है एक भी कल-कारखाने

पत्थर उधोग, स्लेट उधोग हुआ बंद, हजारों मजदूर हुए बेकार

कालीन उधोग धरातल उतरने से पहले तोड़ दी दम

डॉ शशि कांत सुमन

मुंगेर : आजादी के वर्षो बाद भी धरहरा प्रखंड का औधोगिक विकास नहीं होने से यहां के बेरोजगारों को रोजगार नहीं मिल पा रहा है। रोजगार नहीं मिलने के कारण स्वजनों का दो जून की रोटी की जुगाड़ के लिए अन्य राज्यों की ओर पलायन करना पड़ रहा है।कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के दौरान अन्य राज्यों में यातना सह चुके मजदूरों ने स्थानीय स्तर पर रोजगार नहीं मिलने के कारण एकबार फिर रोजगार ढूंढने के लिए अन्य राज्यों की ओर निकलना शुरू कर दिया है।

रोजगार के लिए एक भी नहीं है कल कारखाने

कभी सुखाड़, कभी बाढ़ की विभीषिका झेलने के लिए अभिशिप्त धरहरा वासियो के लिए साल-दर-साल बीतता गया। लेकिन कोई जनप्रतिनिधियों ने यहां के बेरोजगारों को रोजगार दिलाने के लिए कल-कारखाने खोलने के लिए प्रयास नहीं किए। अंग्रेजी हुकूमत के समय से चले आ रहे पत्थर उत्खनन व स्लेट उधोग भी बंद हो गए। धरहरा के पहाड़ी इलाकों में उन्नत किस्म के पत्थरों के खदान है। पूर्व इन क्षेत्रों में लीज के माध्यम से पत्थर उत्खनन होता था।इन पत्थरों की मांग बिहार सहित अन्य राज्यों में होती थी। इसमें हजारों लोगों को रोजगार मिलता था। लेकिन इन वन क्षेत्रों को भीमबांध वन्य जीव आश्रयणी क्षेत्र घोषित किए जाने के बाद धरहरा के पहाड़ी इलाकों में पत्थर उत्खनन बंद हो गया। इसी तरह आजिमगंज के पहाड़ों में उन्नत किस्म का स्लेट का पत्थर मिलता है। कभी यहां के बने स्लेट देश अन्य राज्यों में रेल के माध्यम से भेजा जाता था। यह उधोग को भी वन्य जीव आश्रयणी क्षेत्र घोषित करने के बाद लीज को रद्द कर दिया।

बंगलवा कालीन उधोग धरातल उतरने के पूर्व तोड़ दी दम

पूर्व मंत्री उपेन्द्र प्रसाद वर्मा के कार्यकाल में बंगलवावासियों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए बंगलवा कचहरी चौक के पास कालीन उधोग भवन का निर्माण कराया गया। लेकिन यह योजना धरातल उतरने से पूर्व ही विभागीय उदासीनता के कारण दम तोड़ दी। वर्तमान में कालीन उधोग भवन में हेल्थ एन्ड वेलनेस सेंटर संचालित किया जा रहा है।

उधोग लगाने की है आपार संभावनाएं

धरहरा में कल कारखाने लगाने के लिए सैकड़ो एकड़ जमीन गैर मजरुआ जमीन है। इसके साथ ही टाल क्षेत्रों में सैकड़ो जमीन है। जहां सिर्फ एक फसल होती है। टाल क्षेत्र की जमीन एनएच 80 के साथ रेलमार्ग से भी जुड़ा हुआ है। इस जमीन को भी एक्वायर कर कल-कारखाने लगाए जा सकते है।

क्या कहते है धरहरावासी

समाजसेविका चंदा यादव, कैलाश यादव ने कहा कि रोजगार के साधन नहीं रहने के कारण रोजगार की तलाश में यहां बेरोजगार अन्यत्र पलायन करते है। यदि यहां कल-कारखाने स्थापित किया जाए तो लोगों को रोजगार अन्यत्र नहीं जाना पड़ेगा। प्रवीण कुमार सिंह, मिलन पटेल ने कहा कि नई ओधोगिक नीति के तहत कल-कारखाने की खोलने की जरूरत है। छोटे-छोटे उधोग के लिए भी बैकों के उदारता दिखाते हुए युवाओं को ऋण देने की भी आवश्यकता है।

धरहरा पीएचसी में लगी धड़कनों पर नजर रखने वाली मशीन. अब यहीं होगा ईसीजी, नहीं जाना पड़ेगा शहर

दिव्य दिनकर संवाददाता

धरहरा (मुँगेर): धरहरा के मरीजों के लिए बड़ी राहत की खबर है। अब सीने में जरा सी भी घबराहट या दिल की धड़कनों में गड़बड़ी महसूस हुई तो सीधे धरहरा पीएचसी जाइए–यहां ईसीजी जांच की सुविधा शनिवार से प्रारंभ कर दी गई है। अस्पताल में हृदय की धड़कनों पर नजर रखने वाली ईसीजी मशीन को सक्रिय कर दिया गया है। सीएचसी के प्रभारी डॉ. अविनाश कुमार ने बताया कि मशीन को इंस्टॉल कर लिया गया है और मरीजों की जांच भी शुरू हो चुकी है। उन्होंने कहा कि ह्रईसीजी जैसी जरूरी जांच अब गांव में ही हो रही है, जिससे समय पर बीमारी पकड़ में आएगी और इलाज में देरी नहीं होगी. गांव के पंचायत जनप्रतिनिधि बोले–अब नहीं लगाना पड़ेगा शहर का चक्कर धरहरा के सरपंच राकेश रंजन उर्फ कालीचरण, पूर्व प्रखंड प्रमुख सह बंगलवा पंचायत की पंचायत समिति सदस्य फूला देवी ,पंचायत समिति सदस्य आशीष कश्यप ने बताया पहले मामूली जांच के लिए भी मुंगेर जाना पड़ता था। अब यहीं सब हो रहा है–बहुत बड़ी सुविधा मिल गई है ,गरीबो के लिए यह सुविधा रामवाण होगी । हमने सालों से ईसीजी जैसी सुविधा की मांग की थी। अब जाकर स्वास्थ्य विभाग की नींद खुली है। उम्मीद है आने वाले समय में अल्ट्रासाउण्ड सहित अन्य सुविधाएं भी मिलेंगी। ईसीजी की खूबियां बताने खुद पहुंचे डॉक्टर और टीम ईसीजी मशीन की शुरूआत के मौके पर प्रभारी डॉ. अविनाश कुमार, मैनेजर राजेश कुमार और संतोष कुमार सहित अन्य स्वास्थ्य कर्मीयों ने मशीन की विशेषताओं और इसके इस्तेमाल के तरीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

नशे में धुत डीजे वाहन चालक ने महिलाओं को रौंदा, दो की मौत

मामला लखीसराय जिले के सूर्यगढ़ा थाना क्षेत्र के मानिकपुर गांव का शादी की खुशियां मातम में बदली, परिजनों में मचा कोहराम

दिव्य दिनकर संवाददाता

लखीसराय (मुंगेर) : मुंगेर प्रमंडल अंतर्गत लखीसराय जिले के सूर्यगढ़ा में एक अनियंत्रित डीजे गाड़ी ने दरवाजे पर बैठी महिलाओं को रौंद दिया. इस हादसे में दो महिलाओं की मौत हो गयी. जबकि एक महिला जख्मी है. चालक फरार हो गया. पुलिस ने वाहन को जब्त कर लिया है. सूर्यगढ़ा प्रखंड के मानिकपुर थाना क्षेत्र के बाकरचक गांव की यह घटना है. घटना शनिवार देर रात की है. हादसे में दो महिलाएं की मौत हो गयी, जबकि एक अन्य जख्मी हो गयी.मृतक की पहचान बाकरचक गांव के रहने वाले स्व. फूचो महतो की पत्नी 80 वर्षीय पार्वती देवी और इसी गांव के रहने वाले स्व. भूखन साव की पत्नी 62 वर्षीय मालती देवी के रूप में हुई. जबकि हादसे में इसी गांव के रहने वाले सुबोध साव की पत्नी 35 वर्षीय कुसुम देवी जख्मी हो गयी. पुलिस के मुताबिक डीजे लोड नियंत्रित वाहन ने ग्रामीण सड़क पर खड़ी दो बाइक,एक साइकिल एवं बिजली के पोल को टक्कर मारकर क्षतिग्रस्त कर दिया. घटना के बाद गाड़ी का चालक गाड़ी खड़ी करके भागने में सफल रहा. पुलिस ने वाहन को कब्जे में लिया है. इधर, घटना को लेकर चर्चा है कि वाहन का चालक नशे की हालत में था. जिससे यह घटना हुई. मानिकपुर थानाध्यक्ष रणधीर कुमार ने बताया कि अभी चालक की पहचान नहीं हो पायी है. न ही उसके अल्कोहल का सेवन करने की पुष्टि हो पायी है. मृतक के परिजनों द्वारा अभी मामले को लेकर आवेदन नहीं दिया गया है. पुलिस द्वारा दोनों शव का सदर अस्पताल लखीसराय में पोस्टमार्टम कराया गया है. जानकारी के मुताबिक डीजे लोड पिकअप गाड़ी ग्रामीण सड़क पर खड़ी थी. वहीं महिलाएं घर के दरवाजे पर बैठी थीं. ड्राइवर ने जैसे ही गाड़ी स्टार्ट किया, गाड़ी उछलकर दरवाजे पर बैठी महिलाओं से जा टकरायी. आनन-फानन में ड्राइवर गाड़ी खड़ी करके फरार होने में सफल रहा. पुलिस ने वाहन को जब्त किया है.

बोले,थानाध्यक्ष

मानिकपुर थानाध्यक्ष रणधीर कुमार ने कहा कि वाकरचक गांव में डीजे लोड पिकअप ने अपने दरवाजे पर बैठी महिलाओं को टक्कर मार दिया. जिससे दो महिलाओं की मौत हुई है. पुलिस द्वारा शव का पोस्टमार्टम कराया गया है. मामले को लेकर अभी आवेदन प्राप्त नहीं हुआ है. पुलिस मामले की छानबीन कर रही है.

भाजपा उपहारा मंडल की नई कमिटी घोषित की गई

अरुणजय शर्मा उपाध्यक्ष, सत्येन्द्र शर्मा महामंत्री और भीम कुमार कोषाध्यक्ष किये गये नियुक्त।

रिपोर्ट - अमरेन्द्र कुमार सिंह

गोह(औरंगाबाद)उपहारा में रविवार को भारतीय जनता पार्टी, उपहारा मंडल की नई कमिटी की घोषणा मंडल अध्यक्ष राजीव कुमार विद्यार्थी द्वारा की गई। संगठन विस्तार और स्थानीय कार्यकताओं को सशक्त करने के उद्देश्य से घोषित इस कमिटी में अनुभवी और युवा चेहरों को जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। घोषित कमिटी में उपाध्यक्ष पद की जिम्मेदारी अरुणजय शमी, नितु कुमारी, श्रीमती रीता देवी, अमोद कुमार उर्फ प्रमोद जायरावाल, श्रीमती रेशम कुमारी और सुभाष वर्मा को सौंपी गई है। महामंत्री के रूप में सत्येन्द्र शर्मा और बृजकिशोर पाल को नियुक्त किया गया है। मंत्री पद के लिए जिन कार्यकताओं को चयनित किया गया है, वे हैं: ज्ञान दिप सिंह उर्फ प्रधान जी, संजय साब, विजय बिन्द, श्रीमती आरती देवी और श्रीमती उषा देवी। कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी श्री भीम कुमार सिंह को दी गई है। मंडल अध्यक्ष राजीव कुमार विद्यार्थी ने नवगठित कमिटी के सभी सदस्यों को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की कि यह टीम संगठन को मजबूत करने, आम जनता से जुड़ने और पार्टी की विचारधारा को जमीनी स्तर तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाएगी।

छेड़ मिलन के गीत रे मितवा छेड़ मिलन के गीत, दो सांपों का 'प्रेम मिलन

अद्भुत नजारा देख लोग बोले- छेड़ो नहीं,करने दो प्यार

तारापुर के गणेली गांव के पास दो सांपों का अद्भुत नजारा दिखा. दोनों सांप आपस में लिपटे हुए थे.

यह दृश्य प्रेम मिलन का प्रदर्शन था,घटना की खबर फैलते ही मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई

रंजीत विद्यार्थी

मुंगेरः अपने जमाने का मशहूर फिल्म 'शेषनाग' का सुपरहिट गीतों में शामिल छेड़ मिलन के गीत रे मितवा छेड़ मिलन के गीत..., का नजारा रविवार को मुंगेर जिले के तारापुर अनुमंडल क्षेत्र में देखने को मिला. बताते चले की वर्ष 1989 में सुपरहिट फिल्म शेषनाग रिलीज हुई थी. इस फिल्म में इच्छाधारी नाग और नागिन का प्रेम मिलन पर छेड़ मिलन के गीत रे मितवा छेड़ मिलन के गीत...,को बेहतरीन ढंग से प्रदर्शित किया गया था. इसी तरह का कुछ अद्भुत व अनोखा नजरा तारापुर अनुमंडल क्षेत्र के गणेली गांव में देखने को मिला। यहां दो सांप प्रेम करते हुए दिखाई दिए। वे एक-दूसरे से लिपटे हुए थे। यह दृश्य इतना अद्भुत था कि लोग हैरान रह गए। सांपों को देखने के लिए मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। लोगों ने इस घटना को अपने कैमरे में कैद कर लिया और सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। माना जाता है कि सांपों का ऐसा व्यवहार अक्सर प्रजनन काल में देखा जाता है।

आपस में लिपटे हुए थे दो सांप

दरअसल, गणेली गांव के पास दो बड़े सांप अठखेलियां कर रहे थे। जैसे ही यह खबर फैली, गांव वाले और राहगीर वहां जमा हो गए। स्थानीय लोगों ने बताया कि उन्होंने दो विशाल सांपों को आपस में लिपटे हुए देखा। वे एक खास अंदाज में घूम रहे थे। यह देखकर वे हैरान रह गए। उन्होंने तुरंत इस-की सूचना अन्य लोगों को दी।

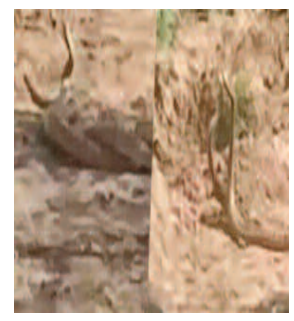

सांपों की अठखेलियों देखने को लगी भीड़

सांपों की अठखेलियों को देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। हर कोई इस नजारे को हैरानी से देख रहा था। लोगों ने इस पल को कैमरे में कैद कर लिया। फिर इसे सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया। वीडियो में सांप झाड़ियों के बीच लिपटे हुए दिख रहे हैं। वे एक दूसरे के चारों ओर घूम रहे हैं। ऐसा लग रहा था जैसे वे कोई नृत्य कर रहे हों।

प्रजनन काल में सांपों का ऐसा व्यवहार

सांपों का ऐसा व्यवहार अक्सर उनके प्रजनन काल में देखा जाता है। नर सांप मादा सांप को आकर्षित करने के लिए ऐसा करते हैं। वे आपस में कुश्ती करते हैं या अठखेलियां करते हैं। इस दृश्य की दुर्लभता ने इसे स्थानीय लोगों के लिए यादगार बना दिया। यह घटना प्रकृति के अद्भुत और रहस्यमय पहलुओं को दिखाती है। इसे देखकर लोग हैरान और खुश हो गए।

जिले में महिला संवाद कार्यक्रम सभी ग्यारह प्रखंडों के चयनित ग्राम संगठनों में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

रिपोर्ट - प्रमोद कुमार सिंह

औरंगाबाद :- जिले में महिला संवाद कार्यक्रम सभी ग्यारह प्रखंडों के चयनित कुल तीस ग्राम संगठनों में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

औरंगाबाद जिला में अभी तक 619 ग्राम संगठनो मे महिला संवाद का आयोजन किया जा चूका है। जिले में प्रतिदिन 15 महिला संवाद रथ का संचालन दो पालियो मे किया जा रहा है महिला संवाद बिहार सरकार का महिलाओं के साथ सीधा संवाद करने की अनूठी पहल है । जहाँ महिला सशक्तीकरण संबंधी योजनाओं की जानकारी महिलाओं के साथ साझा की जा रही है । महिलायें इन योजनाओं से हुए सीधे लाभ की बात करती हैं और योजनाओं को और बेहतर बनाने की बात भी संजीदगी के साथ करती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएँ अब अपने सपनों और आकांक्षाओं को खुलकर व्यक्त कर रही हैं । राज्य सरकार की पहल, महिला संवाद , उनके लिए उम्मीदों का एक ऐसा मंच साबित हो रहा है, जहाँ वे न केवल अपनी समस्याओं को उजागर कर रही हैं, बल्कि विकास की नई संभावनाओं की ओर भी इशारा कर रही हैं । इस कार्यक्रम के माध्यम से महिलाएँ अपनी अपेक्षाओं और आवश्यकताओं को सीधे सरकार तक पहुँचा रही हैं, वहीं सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर अपने जीवन में हुए बदलाव को साझा कर दूसरों को प्रेरित भी कर रही हैं । राज्य सरकार की योजनाओं से लाभान्वित महिलाएं –बसंती देवी ,रेखा देवी,कांति देवी,सवीता देवी अदि ने अपने अनुभव साझा किए और बताया कि कैसे इन योजनाओं का लाभ लेकर उन्होंने अपने परिवार के जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार किया है और गाँव की अन्य महिलाओं को भी प्रेरित कर रही हैं। पिछले बीस सालों में राज्य में हुए विकास को उत्तरोत्तर गति प्रदान करने के उद्देश्य से महिला संवाद में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो रही हैं ' जहाँ गाँव की महिलाएं गाँव के विकास के लिए अपनी इच्छाएं एवं आकांक्षाओं को सुचिवद्ध करा रही हैं ' अभी तक कुल 13332 अपेक्षाओं का ऐप मे प्रविष्ट किया जा चुका है ' ग्राम संगठन स्तर पर राज्य के सभी जिलों में महिला संवाद आयोजित किये जा रहे हैं साथ ही राज्य सरकार द्वारा संचालित लोक कल्याणकारी योजना की सफलता पर आधारित फिल्मे भी महिला संवाद रथ में प्रदर्शित की जा रही है ' इसके साथ ही महिला सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन के लिए राज्य में संचालित योजनाओं से संबंधित लीफलेट महिलाओं के बीच वितरित किया जा रहा है ताकि अब तक आप कोई भी महिला योजनाओं का लाभ नहीं ले पाई है तो उससे जुड़कर अपने जीवन में बदलाव लाये और मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार का माहिलाओ के नाम संदेश भी सभी को दिया जा रहा है पार्वती ग्राम संगठन,गनपत तेंदुआ,बारुण के महिला संवाद मे श्री श्रीकांत शास्त्री जिला पदाधिकारी,औरंगाबाद, श्री पवन कुमार ,जिला परियोजना प्रबंधक,जीविका, श्री सुरेश चौधरी, प्रबंधक सामाजिक विकास , श्री अखिलेश कुमार ,प्रखंड परियोजना प्रबंधक,बारुण श्री अमित कुमार, क्षेत्रीय समन्यवक,प्रतिमा कुमारी, सामुदायिक समन्यवक एवं सभी माहिलाओ ने भाग लिया। जिला पदाधिकारी द्वारा महिला संवाद के बारे बताया गया की बिहार सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न विभिन्न तरह की योजना चलाई जा रही है । जिला पदाधिकारी,औरंगाबाद द्वारा विभिन्न छात्रवृत्ति योजना ,मुख्यमंत्री महिला उधमी योजना, मुख्यमंत्री बालिका साईकिल योजना एवं बालिका पोशाक योजना आदि के बारे मे विस्तार से बताया एवं इसका लाभ लेने के लिए उपस्थित सभी माहिलाओ को प्रेरित किया '

सऊदी अरब के विदेश मंत्री ने भारत और पाकिस्तान के समकक्षों से की बात, क्षेत्रीय तनाव कम करने पर चर्चा

एजेंसी

नई दिल्ली। सऊदी अरब के विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान बिन अब्दुल्ला ने भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों के साथ टेलीफोन पर बातचीत की। उन्होंने अपने समकक्षों से बढ़ते सैन्य तनाव को कम करने और शांति बहाल करने की अपील की। सऊदी अरब के विदेश मंत्री ने भारत के विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर और पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार से अलग-अलग वार्ता की। सऊदी दूतावास के अनुसार विदेश मंत्री प्रिंस फैसल बिन फरहान बिन अब्दुल्ला ने बातचीत के दौरान दोनों देशों के साथ सऊदी अरब के संतुलित और घनिष्ठ संबंधों को दोहराया। उन्होंने क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता के प्रति किंगडम की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।सऊदी अरब से पहले अमेरिका के विदेश मंत्री ने भी दोनों देशों के विदेश मंत्रियों से बातचीत की थी।

भारत-पाक तनाव के बीच फेक न्यूज की भरमार, पीआईबी फैक्ट चेक ने किया फेक न्यूज का ऑपरेशन

नई दिल्ली। भारत-पाकिस्तान के बीच चल रहे भारी तनाव, गोलाबारी के बीच सोशल मीडिया पर फेक न्यूज की बाढ़ आ गई है। सोशल मीडिया पर भारत-पाक के बीच चल रहे तनाव को लेकर चल रही फेक खबरों का पीआईबी फैक्ट चेक ने खंडन करते हुए लोगों को सर्तक रहने की सलाह दी है। फेक खबरों की सूची जारी करते हुए पीआईबी फैक्ट चेक की तरफ से बताया गया कि उधमपुर एयरबेस को नष्ट करने की गलत खबरें चलाई जा रही हैं, जबकि उधमपुर एयरबेस चालू है। 'एआईके न्यूज' द्वारा लाइव टीवी पर प्रसारित वीडियो में दावा किया गया है कि पाकिस्तान ने उधमपुर एयरबेस को नष्ट कर दिया है। पीआईबी फैक्ट चेक ने बताया कि प्रसारित वीडियो राजस्थान के हनुमानगढ़ की एक केमिकल फैक्ट्री में आग लगने की घटना से संबंधित है, जिसका भारत-पाकिस्तान की मौजूदा स्थिति से कोई संबंध नहीं है। इसके साथ विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर को माफी मांगते हुए दिखाते हुए एक छेड़छाड़ किया हुआ वीडियो ऑनलाइन प्रसारित हो रहा है। पीआईबी फैक्ट चेक ने बताया कि यह वीडियो एआई द्वारा जनरेट किया गया है और झूठे प्रचार का हिस्सा है। इसके साथ एक भारतीय वायुसेना विमान दुर्घटना का पुराना वीडियो गलत संदर्भ में शेयर किया जा रहा है। भारत-पाकिस्तान के मौजूदा हालात के संदर्भ में वायुसेना विमान दुर्घटना का एक वीडियो गलत तरीके से शेयर किया जा रहा है। पीआईबी फैक्ट चेक ने बताया कि यह वीडियो वायुसेना के एक जगुआर विमान को दिखाता है जो मार्च 2025 में एक नियमित प्रशिक्षण उड़ान के दौरान अंबाला में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था।

मां जानकी सीतामढ़ी के लिए लाडली बेटी है :आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण जी महाराज

सीतामढ़ी। जगत जननी मां सीता सीतामढ़ी के लिए माता नहीं बल्कि लाडली बेटी है।वह तो सीतामढ़ी और सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र के लिए गौरवान्वित करने वाली है।मिथिला सीतामढ़ी की भूमि को उन्होंने मनुष्यता के भाव से सिंचा है। उपरोक्त बातें सीतामढ़ी पुनौराधाम श्री जानकी जन्म स्थान के सीता प्रेक्षागृह में हिन्दुस्थान समाचार की ओर से आयोजित सीता महोत्सव में मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य मिथिलेशनंदिनीशरण जी महाराजी ने कही।उन्होंने मा जानकी के अलग अलग रूपों और धर्म में वर्णित तथ्यों से सभाकक्ष में मौजूद लोगों को अवगत कराया।उन्होंने कहा कि यूं तो चार धाम हैं लेकिन मिथिला की धरती चारों धाम की सिद्धि देने वाली धरती है।उन्होंने कहा कि भगवान के कई रूप और अवतार हैं।उन्होंने कहा कि मां जानकी के चरित्र में किसी तरह का कोई संशय नहीं है।उनका चरित्र तो वेद,प्रशस्ति और स्तुति करने वाला है।सैकड़ों श्लोकों में मां जानकी के रूपों का वर्णन है।महर्षि वाल्मीकि रचित रामायण सहित अन्य रचित रामायण में जगत जननी के चरित्र का अनोखे ढंग से वर्णन है,जिसे चंद शब्द सीमा में नहीं बांधा जा सकता।वाल्मीकी जी के रामायण में मां सीता की चरित्र व्यंजना वाली है। उन्होंने सीतामढ़ी की भूमि को उपासना वाली भूमि करार दिया।उन्होंने कहा कि मिथिला के बाहर सीता माता है,लेकिन मिथिला में तो वह लाडली सुकुमारी बेटी है।

पाकिस्तान एक जिम्मेदार राष्ट्र कभी भी नहीं बन सकेगा : गुलाम अली खटाना

नई दिल्ली । 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पाकिस्तान की ओर से लगातार भारतीय नागरिकों को टारगेट किए जाने पर भाजपा सांसद गुलाम अली खटाना ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान एक जिम्मेदार राष्ट्र बनने में विफल रहा है। भारत-पाकिस्तान तनाव को लेकर समाचार एजेंसी आईएएनएस से बातचीत के दौरान भाजपा सांसद गुलाम अली खटाना ने कहा कि युद्ध कोई समाधान नहीं है, इससे केवल विनाश होता है। हालांकि, पाकिस्तान लगातार हमारे निर्दोष नागरिकों को निशाना बना रहा है। तीन दिनों से वह लगातार मिसाइल और ड्रोन दाग रहा है। जिस तरह की वह हरकत लगातार कर रहा है, यही वजह है कि पाकिस्तान कभी भी एक जिम्मेदार राष्ट्र नहीं बन पाया। वह भारत के खिलाफ चाहे सुरंग खोदने के माध्यम से हो या मादक पदार्थों की तस्करी के माध्यम से, वह हमेशा आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त रहा है।

ऑपरेशन सिंदूर पर डोभाल-वांग यी की बातचीत: एनएसए बोले- 'आतंक के खिलाफ कार्रवाई जरूरी थी'

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत-पाकिस्तान के मध्य युद्धविराम की घोषणा के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल और चीन के विदेश मंत्री वांग यी के बीच शनिवार देर रात अहम टेलीफोनिक वार्ता हुई। इस बातचीत का केंद्र बिंदु हाल ही में हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' और क्षेत्रीय शांति रहा। डोभाल ने वांग यी को स्पष्ट किया कि पहलगाम आतंकी हमले में भारतीय नागरिकों की गंभीर क्षति के बाद आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई आवश्यक थी। उन्होंने कहा, 'भारत युद्ध नहीं चाहता, यह हमारी पसंद नहीं थी, लेकिन आतंकी हमले के जवाब में एक्शन जरूरी था।' उन्होंने आशा जताई कि भारत और पाकिस्तान दोनों जल्द ही युद्धविराम के प्रति पूरी प्रतिबद्धता के साथ क्षेत्र में शांति और स्थिरता बहाल करेंगे। चीन के विदेश मंत्री वांग यी ने इस बातचीत में पहलगाम आतंकी हमले

की निंदा की और कहा कि चीन आतंकवाद के सभी रूपों का विरोध करता है। उन्होंने कहा, वर्तमान वैश्विक परिदृश्य अस्थिर है और एशियाई क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। भारत और पाकिस्तान दोनों चीन के पड़ोसी हैं और इन्हें आपस में सहयोग और संवाद के रास्ते पर चलना चाहिए। वांग यी ने डोभाल के इस रुख की सराहना की कि युद्ध भारत की प्राथमिकता नहीं है। उन्होंने उम्मीद जताई कि भारत और पाकिस्तान संयम बरतते हुए संवाद और परामर्श के माध्यम से अपने मतभेदों का समाधान निकालेंगे और तनाव को बढ़ने से रोकेंगे। उन्होंने कहा, 'चीन भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापक और स्थायी युद्धविराम का समर्थन करता है। यह दोनों देशों के साथ-साथ पूरे अंतरराष्ट्रीय समुदाय की भी इच्छा है।' उल्लेखनीय है कि बीते दिनों भारत द्वारा पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों पर की गई कार्रवाई 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद क्षेत्र में तनाव बढ़ गया था। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा सीजफायर की घोषणा की गई और अब चीन की मध्यस्थता की भूमिका से स्थिति में कूटनीतिक हलचल तेज हो गई है।

संघर्ष विराम तोड़ने पर विदेश सचिव ने दी कड़ी चेतावनी, स्थिति की गंभीरता को समझे पाकिस्तान

एजेंसी

नई दिल्ली। पाकिस्तान ने भारत के साथ सैन्य कार्रवाई रोकने पर बनी सहमति के कुछ ही घंटे में इसका उल्लंघन करना शुरू कर दिया है। इस पर विदेश सचिन विक्रम मिस्री ने कहा है कि यह आक्रामकता बेहद निंदनीय है और इसके लिए पाकिस्तान स्वयं जिम्मेदार है। विदेश मंत्री ने कहा, पाकिस्तान को स्थिति की गंभीरता को समझना चाहिए और इस आक्रामकता को रोकने के लिए तत्काल और उचित कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि सेना स्थिति पर कड़ी नजर रख रही है और उसे किसी भी घुसपैठ से निपटने के लिए सख्त और कड़े कदम उठाने के निर्देश दिए गए हैं। एक विशेष वीडियो वक्तव्य में विदेश सचिव ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से चल रही शत्रुता को रोकने के लिए आज शाम को सहमति बनी। हालांकि, पिछले कुछ घंटों में पाकिस्तान की

ओर से इस समझौते का गंभीर उल्लंघन हुआ है। भारतीय सैनिक जवाबी कार्रवाई कर रहे हैं और सीमा पर इस घुसपैठ का जवाब दे रहे हैं।

दिल्ली में अगले हफ्ते में पारा जा सकता है 40 के पार

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के कुछ इलाकों में हुई झमाझम बारिश से लोगों को गर्मी से राहत मिली। कुछ इलाकों में हल्की बारिश और तेज हवाएं चलीं जिससे मौसम सुहाना बना रहा। दिल्ली का अधिकतम तापमान 35.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो औसत से 3.4 डिग्री सेल्सियस कम है। न्यूनतम तापमान 25.8 डिग्री सेल्सियस रहा, जो सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस अधिक है। मौसम विभाग के वैज्ञानिक डॉ. नरेश कुमार ने कहा कि आज सुबह दिल्ली-एनसीआर में बारिश हुई। आने वाले दिनों में दिल्ली में आंशिक रूप से बादल छाए रह सकते हैं, लेकिन आने वाले सप्ताह में उत्तर-पश्चिम भारत में तापमान 4-6 डिग्री तक बढ़ने की उम्मीद है। रविवार को राजधानी में आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। सतही हवाएं 15 से 25 किमी प्रति घंटे की गति से चलेंगी, जो कभी-कभी 35 किमी प्रति घंटे तक की झोंकों में बदल सकती हैं। दिल्ली में अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 38 से 40 डिग्री सेल्सियस और 26 से 28 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। सोमवार को आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे।

सतही हवाएं 15 से 25 किमी प्रति घंटे की गति से चलेंगी, जो कभी-कभी 35 किमी प्रति घंटे तक की झोंकों में बदल सकती हैं। दिल्ली में अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 39 से 41 डिग्री सेल्सियस और 27 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। मंगलवार को भी राजधानी में आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। सतही हवाएं 15 से 25 किमी प्रति घंटे की गति से चलेंगी, जो कभी-कभी 35 किमी प्रति घंटे तक की झोंकों में बदल सकती हैं। दिल्ली में अधिकतम और न्यूनतम तापमान क्रमशः 39 से 41 डिग्री सेल्सियस और 27 से 29 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। मौसम विभाग ने बताया कि 14 मई तक पूर्वी भारत के अलग-अलग इलाकों में उष्ण लहर चलने की संभावना है। 12 मई तक उत्तर-पश्चिम भारत में और 14 मई तक मध्य भारत में गरज के साथ बारिश और बिजली गिरने की संभावना है और उसके बाद इसकी तीव्रता में कमी आएगी।

10 और 11 मई को महाराष्ट्र और गुजरात राज्य में गरज के साथ बारिश, बिजली गिरने और तेज़ हवाएं चलने की संभावना है। 10 से 14 मई के दौरान पूर्वोत्तर भारत में गरज के साथ भारी बारिश और बिजली गिरने की संभावना है।

भारत- पाकिस्तान तनाव: नोएडा में रेड अलर्ट,चिल्ला बॉर्डर पर सख्त निगरानी, अस्थायी मोर्चाबंदी

एजेंसी

नोएडा। भारत-पाकिस्तान के बीच तनाव के मद्देनजर दिल्ली से सटे नोएडा में रेड अलर्ट जारी करते सुरक्षा व्यवस्था कड़ी की गई है। इस क्रम में दिल्ली और नोएडा को जोड़ने वाले चिल्ला बॉर्डर पर सख्त निगरानी रखी जा रही है। यहां अस्थायी रूप से मोर्चाबंदी रकी गई है। एक्सप्रेसवे की हर गतिविधि पर नजर रखी जा रही है। बैरिकेडिंग कर पुलिस बल की तैनाती बढ़ा दी गई है।आने-जाने वाले हर वाहन की सघन चेकिंग की जा रही है।

संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने के लिए सीसीटीवी कैमरों की सहायता ली जा रही है। अधिकारियों का कहना है कि किसी भी तरह की अनहोनी से निपटने के लिए स्थानीय पुलिस पूरी तरह तैयार है। नोएडा पुलिस कमिश्नरेट की ओर से बताया गया कि चिल्ला बॉर्डर के साथ-साथ डीएनडी और कालिंदी कुंज बॉर्डर पर भी सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। पुलिस पेट्रोलिंग बढ़ा दी गई है और स्पेशल कमांडो यूनिट्स को अलर्ट पर रखा गया है। पुलिस की

टीमें 24 घंटे सक्रिय रहेंगी और हर आने-जाने वाले व्यक्ति पर पैनी नजर रखेंगी। पुलिस कमिश्नर लक्ष्मी सिंह ने दिल्ली से नोएडा आने-जाने वाले नागरिकों से भी अपील की है कि वे सुरक्षा एजेंसियों के साथ सहयोग करें और किसी भी संदिग्ध वस्तु या गतिविधि की तुरंत सूचना पुलिस को दें। अफवाह से बचें और केवल आधिकारिक सूचनाओं पर ही विश्वास करें।

जम्मू-कश्मीर समेत उत्तर-पश्चिमी इलाकों में स्थित तकनीकी और वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा बढ़ाई जाएगी: डॉ जितेंद्र सिंह

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह ने कहा कि जम्मू-कश्मीर, पंजाब, चंडीगढ़ और राजस्थान तथा गुजरात के उत्तर-पश्चिमी इलाकों में स्थित तकनीकी और वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा बढ़ाई जाएगी। इसके अलावा, श्रीनगर और लेह में महत्वपूर्ण आईएमडी प्रतिष्ठानों की सुरक्षा बढ़ाई जाएगी। मौजूदा सुरक्षा स्थिति के मद्देनजर देशभर में तकनीकी और वैज्ञानिक प्रतिष्ठानों की सुरक्षा तैयारियों की समीक्षा बैठक में वरिष्ठ अधिकारियों और वैज्ञानिक एवं तकनीकी विभागों के प्रमुख मौजूद रहे। डॉ जितेंद्र सिंह ने विशेष रूप से सीएसआईआर-भारतीय एकीकृत चिकित्सा संस्थान (आईआईआईएम), जम्मू; सीएसआईआर-केंद्रीय वैज्ञानिक उपकरण संगठन (सीएसआईओ), चंडीगढ़; सीएसआईआर-केंद्रीय

चमड़ा अनुसंधान संस्थान (सीएलआरआई), जालंधर; सीएसआईआर-सूक्ष्मजीव प्रौद्योगिकी संस्थान (आईएमटेक), चंडीगढ़; डीबीटी-बायोटेक अनुसंधान नवाचार परिषद (ब्रिक) - राष्ट्रीय कृषि-खाद्य और जैव विनिर्माण संस्थान (एनएबीआई), मोहाली; श्रीनगर और अन्य प्रमुख क्षेत्रों में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) प्रतिष्ठान; लद्दाख और आसपास के क्षेत्रों में पृथ्वी विज्ञान अनुसंधान स्टेशनों की तैयारियों और सुरक्षा तंत्र की समीक्षा की। डॉ जितेंद्र सिंह ने इस बात पर जोर दिया कि वैज्ञानिक सुविधाएं, विशेष रूप से वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी), भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के तहत आने वाली सुविधाएं राष्ट्रीय बुनियादी ढांचे के प्रमुख स्तंभ हैं। उन्होंने सभी वैज्ञानिक संस्थानों को मौजूदा स्थिति के मद्देनजर अपने मौजूदा सुरक्षा प्रोटोकॉल की समीक्षा करने और उसे बढ़ाने का निर्देश दिया गया है।

सीबीआई ने 8 राज्यों में 42 ठिकानों पर की छापेमारी, 5 गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) ने साइबर अपराधियों को अवैध रूप से सिम कार्ड मुहैया कराने में शामिल गिरोह के खिलाफ कार्रवाई की है। यह कार्रवाई ट्रांसनेशनल साइबर क्राइम नेटवर्क और 'डिजिटल अरेस्ट' जैसे अपराधों से जुड़ी है। 'ऑपरेशन चक्र-V' के तहत इन अपराधियों के 8 राज्यों में फैले 42 ठिकानों पर एकसाथ छापेमारी की गई। इस कार्रवाई में 5 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। सीबीआई ने असम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना, कर्नाटक और तमिलनाडु में टेलीकॉम ऑपरेटर्स के पॉइंट ऑफ सेल एजेंट्स के ठिकानों पर छापे मारे।आरोप है कि ये एजेंट साइबर अपराधियों की मिलीभगत से फर्जी केवाईसी दस्तावेजों के आधार पर सिम कार्ड जारी कर रहे थे। इनका इस्तेमाल डिजिटल अरेस्ट, फर्जी विज्ञापन, निवेश धोखाधड़ी, यूपीआई फ्रॉड जैसे मामलों में हो रहा था। छापों

के दौरान सीबीआई ने मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस, संदिग्ध केवाईसी दस्तावेज और अपराध की आय से खरीदी गई संपत्तियों से संबंधित दस्तावेज जब्त किए हैं। गिरफ्तार पांचों आरोपी चार अलग-अलग राज्यों से हैं और इन पर टेलीकॉम नियमों का उल्लंघन कर सिम कार्ड बेचने का आरोप है।

भारत में मातृ मृत्यु अनुपात में उल्लेखनीय है सुधार, 2019-21 में एमएमआर में घटकर प्रति लाख जीवित जन्मों पर 93 हुई

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत के महापंजीयक (आरजीआई) के नमूना पंजीकरण प्रणाली (एसआरएस) रिपोर्ट 2021 के अनुसार, भारत में प्रमुख मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य संकेतकों में उल्लेखनीय सुधार हो रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा जारी भारत के महापंजीयक और जनगणना आयुक्त कार्यालय नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत में मातृ मृत्यु अनुपात (एमएमआर) 2019-21 में घटकर प्रति लाख जीवित जन्मों पर 93 हो गई, जो 2018-20 में 97 और 2017-2019 में 103 थी। वही 2021 में शिशु मृत्यु दर प्रति 1000 बच्चों में 31 हो गई है। जबकि यह संख्या 2014 में प्रति 1000 जन्म पर 45 बच्चे थी। कुल प्रजनन दर 2021 में 2.0 पर स्थिर है, जो 2014 में 2.3 थी।

आठ राज्य पहले ही मातृ मृत्यु अनुपात का एसडीजी लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं जिसमें केरल (20), महाराष्ट्र (38), तेलंगाना (45), आंध्र प्रदेश (46), तमिलनाडु (49), झारखंड (51), गुजरात (53), कर्नाटक (63) शामिल हैं। 2030 तक इसके साथ बारह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश पहले ही यूएमआर (2030 तक <=25) का एसडीजी लक्ष्य प्राप्त कर चुके हैं जिसमें केरल (8), दिल्ली (14),

तमिलनाडु (14), जम्मू और कश्मीर (16), महाराष्ट्र (16), पश्चिम बंगाल (20), कर्नाटक (21), पंजाब (22), तेलंगाना (22), हिमाचल प्रदेश (23), आंध्र प्रदेश (24) और गुजरात (24) शामिल है। छह राज्य/केंद्र शासित प्रदेश पहले ही एनएमआर का एसडीजी लक्ष्य (वर्ष 2030 तक मृत्यु की संख्या 12) प्राप्त कर चुके हैं केरल (4), दिल्ली (8), तमिलनाडु (9), महाराष्ट्र (11), जम्मू और कश्मीर (12) और हिमाचल प्रदेश (12)। 07 अप्रैल 2025 को प्रकाशित वर्तमान संयुक्त राष्ट्र मातृ मृत्यु दर अनुमान अंतर-एजेंसी समूह (यूएन-एमएमईआईजी) रिपोर्ट 2000-2023 के अनुसार, भारत की एमएमआर 2020 से 2023 तक में 23 अंकों की कमी आई है। इस उपलब्धि से, 1990 से 2023 तक पिछले 33 वर्षों में 48 प्रतिशत की वैश्विक कमी की तुलना में भारत की एमएमआर में अब 86 प्रतिशत की कमी आई है। भारत बाल मृत्यु दर में कमी लाने वाले शीर्ष प्रदर्शन करने वाले देशों में से एक है।

दिल्ली में राशन की कोई कमी नहीं : मनजिंदर सिंह सिरसा

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली के खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि राजधानी में न वस्तुएं महंगी होगी न ही राशन की कोई कमी है। खाद्य और आपूर्ति प्रणालियां पूरी तरह से चालू हैं। लोगों को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। दिल्ली सरकार और मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सबका ख्याल रहने के लिए हैं। मनजिंदर सिंह सिरसा ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि सभी सरकारे आपातकलीन स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहती है। इसको लेकर विभिन्न विभागों की बैठक होती है। इसमें घबराने की कोई जरूरत नहीं है। दिल्ली पूरी तरह सुरक्षित और यहां किसी भी वस्तु की कोई कमी नहीं है। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना अपना काम दिन-रात कर रही है।

मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि आपको चिंता करने की जरूरत नहीं है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और दिल्ली के मुख्यमंत्री आपकी चिंता कर रहे हैं। दिल्ली सुरक्षित थी, दिल्ली सुरक्षित है, भारत सुरक्षित था, भारत सुरक्षित है। उन्होंने सोशल साइटों पर चल रही अफवाहों से

सतर्क रहने की अपील करते हुए कहा कि राशन और तेल लेने के लिए न दौड़े। खाद्य और आपूर्ति प्रणालियां पूरी तरह से चालू हैं। हमें डर या घबराहट का शिकार नहीं होना चाहिए। सरकार सभी चुनौतियों से निपटने में सक्षम है। वस्तुओं की बड़े पैमाने पर खरीद या जमाखोरी की बिल्कुल भी जरूरत नहीं है।

आपातकालीन तैयारियों की मुख्यमंत्री ने की उच्चस्तरीय समीक्षा

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव के मद्देनजर मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने दिल्ली सचिवालय में सभी विभागाध्यक्षों के साथ उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में आपातकालीन स्थिति से निपटने के लिए सभी विभागों की तैयारी की समीक्षा हुई। मुख्यमंत्री ने बिजली विभाग को बिजली जाने की स्थिति में तैयारी रखने और आवश्यक सेवाओं के लिए बैकअप बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने गृह व पुलिस विभाग को परिचालन तत्परता और जल-विद्युत आपूर्ति की सुरक्षा बनाए रखने के आदेश दिए गए। मुख्यमंत्री ने लोक निर्माण विभाग, दिल्ली नगर निगम,नई दिल्ली नगर पालिक आदि को आपात स्थिति में अवसंरचना निर्माण के लिए ठेकेदारों व मशीनरी की सूची तैयार रखने के निर्देश दिए। उन्होंने दिल्ली परिवहन निगम व दिल्ली मेट्रो रेल कार्पोरेशन को आपात योजना व निकासी के लिए रूट मैप्स व फ्लीट प्रबंधन तैयार करने को कहा। दमकल विभाग को अलर्ट स्थिति में रहने के निर्देश दिए गए। दिल्ली सरकार ने आठ मई को

आदेश जारी कर सभी अधिकारियों की छुट्टियां रद्द कर दीं। इसके साथ ही अगले आदेश तक किसी भी अधिकारी और कर्मचारी को छुट्टी देने पर रोक लगा दी गई है। दिल्ली में नागरिकों की सुरक्षा और आपात स्थिति से निपटने की तैयारियों को और मजबूत बनाने के लिए दिल्ली लोक निर्माण विभाग ने नागरिक सुरक्षा निदेशालय के साथ मिलकर 09 मई की दोपहर आईटीओ स्थित पीडब्ल्यूडी मुख्यालय की बहुमंजिला इमारत पर एयर रेड अलर्ट सायरन का परीक्षण किया। दिल्ली के लोक निर्माण मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने बताया कि शहर की प्रमुख बहुमंजिला इमारतों पर 40 से 50 एयर रेड अलर्ट सायरन लगाए जाएंगे। आपात स्थिति में यह सायरन चेतावनी देने का काम करेंगे। सभी सायरनों को एक केंद्रीय कमांड सेंटर से नियंत्रित किया जाएगा और इनका संचालन राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अधीन होगा।

सीजफायर उल्लंघन पर सहवाग का पाकिस्तान पर तंज, 'कुत्ते की दुम टेढ़ी ही रहती है'

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व भारतीय क्रिकेटर वीरेंद्र सहवाग ने भारत के साथ संघर्ष विराम समझौते के उल्लंघन के बाद पाकिस्तान पर निशाना साधा। दोनों देशों द्वारा सार्वजनिक रूप से संघर्ष विराम पर सहमति जताए जाने के कुछ ही घंटे बाद, अंतर्राष्ट्रीय सीमा और नियंत्रण रेखा (एलओसी) पर कई विस्फोटों की सूचना मिली, जिसमें पाकिस्तानी ड्रोन ने जम्मू-कश्मीर, पंजाब और राजस्थान के संवेदनशील क्षेत्रों को निशाना बनाया। अपने आधिकारिक एक्स (पूर्व में ट्विटर) हैंडल पर सहवाग ने एक प्रसिद्ध हिंदी मुहावरे का इस्तेमाल करते हुए पोस्ट किया, कुत्ते की दुम टेढ़ी की टेढ़ी ही रहती है। यह कहावत, जो आम तौर पर बदलाव के लिए प्रतिरोधी लोगों या संस्थाओं का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल की जाती है, को पाकिस्तान द्वारा संघर्ष विराम प्रतिबद्धताओं से पीछे हटने के रिकॉर्ड पर सीधा कटाक्ष माना जाता है। सहवाग को मुल्तान का सुल्तान कहा जाता है। उन्होंने मुलतान में तिहरा शतक बनाया था। दोनों देशों द्वारा दिन में पहले संयुक्त रूप से औपचारिक संघर्ष विराम समझौते की घोषणा किए जाने के बावजूद उल्लंघन हुआ। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने पुष्टि की कि दोनों पक्षों के सैन्य संचालन महानिदेशक (डीजीएमओ) ने तत्काल प्रभाव से सभी शत्रुताएं - चाहे भूमि, वायु या समुद्र से - समाप्त करने पर सहमति व्यक्त की है। विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर ने भी संघर्ष विराम की पुष्टि की। उन्होंने कहा, भारत और पाकिस्तान ने गोलीबारी और सैन्य कार्रवाई को रोकने पर एक समझौता किया है। भारत ने आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों के खिलाफ लगातार एक दृढ़ और अडिग रुख़ बनाए रखा है - और यह ऐसा करना जारी रखेगा। हालांकि, एक चौंकाने वाले बदलाव में, शाम को श्रीनगर में विस्फोट हुए।

होंडा ने सीबी650आर और सीबीआर650आर को ई-क्लच तकनीक के साथ किया लॉन्च

नयी दिल्ली। प्रीमियम मोटरसाइक्लिंग के क्षेत्र को नए आयाम देते हुए होंडा मोटरसाइकिल और स्कूटर इंडिया (एचएमएसआई) ने एडवांस्ड ई-क्लच टेक्नोलॉजी से लैस मिडल-वेट 650सीसी मोटरसाइकिल 2025 सीबी650 आर और सीबीआर650आर को लॉन्च किया है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि बिग विंग डीलरशिप पर बुकिंग शुरू हो चुकी है और मई 2025 के अंतिम सप्ताह से डिलीवरी की योजना है। सीबी650आर की दिल्ली में एक्स शोरूम कीमत 9.60 लाख रुपये और सीबीआर650 आर की कीमत 10.40 लाख रुपये है। कंपनी के विक्रय एवं विपणन निदेशक योगेश माथुर ने कहा हम इंडियन राइडर्स के लिए नई सीबी650आर और सीबीआई650 आर को लेकर बहुत उत्साहित हैं, अब ये क्रांतिकारी ई-क्लच टेक्नोलॉजी के साथ पेश की गई हैं। इनके स्टैंडर्ड संस्करणों को पहले ही शानदार रिस्पॉन्स मिला था, और ई-क्लच एडिशन से ये एक्सपीरियंस और भी एडवांस होगा। ये मोटरसाइकिल्स परफॉर्मेंस, ईज़ और इनोवेशन का परफेक्ट बैलेंस ऑफर करती हैं।

राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान तेल, गैस पर होगा सरकार का पहला अधिकार

नई दिल्ली। तेल क्षेत्र से जुड़े कानूनों में संशोधन के लिए तैयार किए गए मसौदा नियमों के अनुसार राष्ट्रीय आपातकाल की स्थिति में सरकार के पास देश में उत्पादित सभी तेल और प्राकृतिक गैस पर पहला अधिकार होगा। कच्चे तेल को भूमिगत या समुद्र तल के नीचे से निकाला जाता है और इसे पेट्रोल और डीजल जैसे ईंधनों में परिष्कृत किया जाता है। इसके साथ ही प्राकृतिक गैस का उपयोग बिजली उत्पादन, उर्वरक उत्पादन, वाहनों के लिए सीएनजी और पाइप्ड रसोई गैस के लिए किया जाता है। नियमों में संशोधन से जुड़े मसौदे में ऐसे अधिकारों को शामिल करने का मकसद सरकार को राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने और आपात स्थितियों के दौरान सार्वजनिक कल्याण सुनिश्चित करने में मदद करना है। मसौदा नियमों के अनुसार तेल और प्राकृतिक गैस के उत्पादकों को 'पूर्व-अधिकरण के समय प्रचलित उचित बाजार मूल्य' का भुगतान किया जाएगा। पेट्रोलियम व प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने मसौदा नियमों पर टिप्पणियां आमंत्रित की हैं। इस वर्ष की शुरुआत में संसद ने तेल क्षेत्र (विनियमन व विकास) संशोधन विधेयक पारित किया था। इस विधेयक में घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने, निवेश आकर्षित करने और देश के ऊर्जा परिवर्तन लक्ष्यों को समर्थन देने के लिए 1948 के अधिनियम के पुराने प्रावधानों को बदलने का प्रस्ताव है।

दावा निपटारे के लिए डेढ़ अरब डॉलर का भुगतान करेगी गूगल

नई दिल्ली। दिग्गज टेक कंपनी गूगल, अमेरिकी राज्य टेक्सास को 1.4 अरब डॉलर का भुगतान करेगी। यह भुगतान दावे के निपटारे के लिए किया जाएगा। दरअसल टेक्सास ने गूगल के खिलाफ यूजर्स की मंजूरी के बिना उनका डेटा इस्तेमाल करने का आरोप लगाते हुए मुकदमा दायर किया था। टेक्सास के स्टेट अटॉर्नी जनरल ने यह जानकारी दी। अटॉर्नी जरनल केन पैक्सटन ने बताया कि यह समझौता टेक कंपनियों के लिए एक संदेश है कि हम हमारे अधिकारों और आजादी को बेचकर उन्हें पैसे नहीं कमाने देंगे। पैक्सटन ने कहा कि टेक्सास में, बड़ी तकनीकी कंपनियां कानून से ऊपर नहीं हैं। वर्षों तक गूगल ने लोगों की गतिविधियों, निजी सर्च और यहां तक कि उनके वॉइस प्रिंट्स और फेसियल ज्योमेट्री को भी अपने उत्पादों और सेवाओं के लिए इस्तेमाल किया। यह समझौता टेक्सास द्वारा गूगल के खिलाफ किए गए जियो-लोकेशन, गुप्त सर्च और बायोमीट्रिक डेटा से संबंधित कई दावों का निपटारा करता है। गूगल के प्रवक्ता जोस कास्टानेडा ने कहा कि यह समझौता पुराने दावों की एक श्रृंखला का निपटारा है, जिनमें से कुछ उत्पाद नीतियों से संबंधित हैं जिन्हें कंपनी पहले ही बदल चुकी है। कंपनी ने यह भी स्पष्ट किया कि समझौते के लिए किसी भी नए उत्पाद परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है। पैक्सटन ने कहा कि 1.4 अरब डॉलर इस प्रकार के डेटा-गोपनीयता उल्लंघनों पर गूगल के साथ समझौते में किसी भी राज्य द्वारा जीती गई सबसे बड़ी राशि है।

सैटेलाइट सेवाओं पर कंपनियों को देना पड़ सकता है राजस्व का चार फीसदी शुल्क

नई दिल्ल्सी। दूरसंचार नियामक ट्राई ने एलन मस्क की स्टारलिंक जैसी उपग्रह संचार सेवा प्रदाता कंपनियों पर सालाना राजस्व का चार फीसदी स्पेक्ट्रम उपयोग शुल्क लगाने की सिफारिश की। इसके साथ ही, प्रति शहरी ग्राहक 500 रुपये का वार्षिक शुल्क भी देना होगा। ये सिफारिशें एलन मस्क की स्टारलिंक के भारत में आने से पहले की गई हैं। भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) ने कहा, सैटेलाइट नेटवर्क पर उपलब्ध कुल बैंडविड्थ बहुत कम है। स्पेक्ट्रम को सैटेलाइट प्रदाताओं के बीच साझा किया जा सकता है। ट्राई चेयरमैन अनिल कुमार लाहोटी ने कहा, यह एक पूरक सेवा है। प्रतिस्पर्धा के संदर्भ में इस मुद्दे की जांच करने का कोई ठोस आधार नहीं है। स्टारलिंक को अब ट्राई की सुझाई गई शर्तों के तहत स्पेक्ट्रम हासिल करना होगा।?इसके तहत उसे इस्तेमाल किए जाने वाले स्पेक्ट्रम के लिए न्यूनतम 3,500 प्रति मेगाहर्ट्ज का शुल्क देना होगा। ट्राई ने कहा, सैटेलाइट के लिए स्पेक्ट्रम आवंटन सिर्फ पांच साल तक होगा, जिसे दो साल तक बढ़ाया जा सकता है। स्टारलिंक ने स्पेक्ट्रम की न्यूनतम 15 साल की वैधता मांगी थी। सिफारिश के मुताबिक, 8 फीसदी का प्राधिकरण शुल्क भी लागू होगा।

आरबीआई का एसबीआई पर एक्शन, 1.72 करोड़ रुपये का लगाया जुर्माना

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) पर 1.72 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। यह जुर्माना आरबीआई के कुछ निर्देशों का ठीक से पालन नहीं करने पर लगाया है। यह जुर्माना बैंकिंग विनियमन अधिनियम 1949 के तहत लगाया है। आरबीआई के बयान के अनुसार एसबीआई से आरबीआई के ऋण और अग्रिम वैधानिक व अन्य प्रतिबंध ग्राहक संरक्षण अनधिकृत, इलेक्ट्रॉनिक बैंकिंग लेनदेन में ग्राहकों की देयता को सीमित करना और बैंकों की तरफ से चालू खाते खोलना अनुशासन की आवश्यकता पर जारी किए गए कुछ निर्देशों का पालन नहीं करने पर जुर्माना लगाया है। दरअसल, आरबीआई ने 31 मार्च 2023 तक बैंक की वित्तीय स्थिति के बारे में पर्यवेक्षी मूल्यांकन वैधानिक निरीक्षण

(आईएसई 2023) किया। इस दौरान पता चला कि एसबीआई आरबीआई के निर्देशों के पालन नहीं कर रही है। इसके बाद से एसबीआई को एक नोटिस जारी कर कारण बताने के लिए कहा गया है। इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि निर्देशों का पालन नहीं करने पर आरबीआई आप पर क्यों जुर्माना न लगाए। इसके बाद एसबीआई ने आरबीआई के नोटिस का जवाब दिया फिर व्यक्तिगत सुनवाई के बाद से आरबीआई ने एसबीआई पर जुर्माना लगाया है।

स्टेट बैंक पर यह आरोप था कि उसने एक संस्था (इकाई) को ब्रिज लोन यानी एक तरह का अस्थायी कर्ज दिया, जो केंद्र या राज्य सरकार से मिलने वाली सब्सिडी या भुगतान के बदले में दिया गया था। इसके साथ ही बैंक पर एक अन्य आरोप यह लगा था कि उसने विनियामक आवश्यकताओं के उल्लंघन करते हुए कुछ चालू खाते खोल रखे थे। आरबीआई ने कहा कि यह कार्रवाई विनियामक अनुपालन में कमियों पर आधारित है। इसका उद्देश्य बैंक की तरफ से अपने ग्राहकों के साथ किए गए किसी भी लेनदेन या समझौते की वैधता पर सवाल उठाना नहीं है। इसके अलावा, मौद्रिक जुर्माना आरबीआई की तरफ से एसबीआई के खिलाफ शुरू की जाने वाली किसी भी अन्य कार्रवाई पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना लगाया गया है।

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में उतार चढ़ाव जारी रहने के बावजूद घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली

में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 1.92 प्रतिशत उबलकर 61.60 डॉलर प्रति बैरल पर रहा जबकि लंदन ब्रेंट क्रूड 0.05 प्रतिशत उतरकर 63.88 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

केनरा बैंक ने सभी अवधियों के लिए एमसीएलआर दर 0.10 फीसदी घटाया

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र के केनरा बैंक ने अधिकांश अवधियों के लिए सीमांत लागत आधारित उधार दर (एमसीएलआर) में 0.10 फीसदी की कटौती की है। इस कटौती के बाद कर्ज सस्ते हो जाएंगे। नई दरें 12 मई से प्रभावी होगी। केनरा बैंक ने शेयर बाजार को दी गई जानकारी में बताया कि एमसीएलआर में 0.10 फीसदी की कटौती की गई है। इस कटौती के बाद एक साल की अवधि का एमसीएलआर का मौजूदा दर 9.10 फीसदी से घटकर अब 9 फीसदी रह जाएगा। बैंक ने कहा कि उसकी नई सीमांत एमसीएलआर 12 मई से लागू होगी।बैंक की तरफ से जारी बयान में बताया गया है कि एक महीने, तीन महीने और छह महीने की अवधि के लिए ब्याज दर 8.25-8.80 फीसदी के दायरे में होगी। इसके अलावा एक दिन की अवधि के लिए एमसीएलआर 8.30 फीसदी

के मुकाबले 8.20 फीसदी होगी। बेंचमार्क एमसीएलआर का उपयोग वाहन और व्यक्तिगत ऋण जैसे अधिकांश उपभोक्ता ऋणों की दर तय करने के लिए किया जाता है। उल्लेखनीय है कि रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने पिछले महीने अपनी प्रमुख ब्याज दर रेपो रेट में 0.25 फीसदी की कटौती करके इसे छह फीसदी कर दिया था। रिजर्व बैंक ने रेपो रेट में इस साल लगातार दूसरी बार कटौती की है।

गेल कर्नाटक में एक गीगावाट की अक्षय ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित करेगा, सरकार से समझौता

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की गैस उपयोगिता कंपनी गेल (इंडिया) लिमिटेड ने कर्नाटक सरकार के साथ राज्य में एक गीगा वाट (जीडब्ल्यू) तक की अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं की स्थापना की संभावना तलाशने के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौता ज्ञापन पर कर्नाटक सरकार के बड़े और मध्यम उद्योग तथा अवसंरचना विकास मंत्री एमबी पाटिल और राज?य के ऊर्जा मंत्री केजे जॉर्ज की उपस्थिति में वाणिज्य और उद्योग विभाग के प्रधान सचिव डॉ. एस. सेल्वाकुमार और गेल के कार्यकारी निदेशक (एसडी और नवीकरणीय) ने हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने कहा कि गेल 05 वर्ष की अवधि के भीतर एक गीगा वाट तक की अक्षय ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित करने का इरादा है। इस एमओयू के तहत कर्नाटक सरकार गेल को मौजूदा नीतियों के अनुसार संबंधित विभागों से आवश्यक मंजूरी देगी। इस अवसर पर मंत्री एमबी पाटिल ने कर्नाटक में गेल की रणनीतिक रुचि का स्वागत

करते हुए कहा कि यह समझौता औद्योगिक विकास को आगे बढ़ाते हुए स्वच्छ ऊर्जा निवेश को सुविधाजनक बनाने की हमारी प्रतिबद्धता की पुष्टि करता है। ऊर्जा मंत्री केजे जॉर्ज ने कहा कि यह साझेदारी हमारे राज्य की हरित ऊर्जा केंद्र के रूप में स्थिति को मजबूत करेगी और रोजगार सृजन और बुनियादी ढांचे के विकास में योगदान देगी।

एएआई ने उत्तरी व पश्चिमी क्षेत्र के 32 हवाई अड्डों पर नागरिक उड़ान परिचालन अस्थायी रूप से निलंबित किया

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत और पाकिस्तान के बीच जारी तनाव के मद्देनजर भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) ने उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र के 32 हवाई अड्डों पर नागरिक उड़ान परिचालन अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया है। इसके अलावा नई दिल्ली और मुंबई उड़ान सूचना क्षेत्रों (एफआईआर) के भीतर हवाई यातायात सेवा (एटीएस) मार्गों के 25 खंडों के अस्थायी रूप से बंद रहने की अवधि को बढ़ा दिया गया है। नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने एक बयान में बताया कि एएआई ने उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र के 32 हवाई अड्डों पर नागरिक उड़ान परिचालन अस्थायी रूप से निलंबित किया है। परिचालन कारणों से इन हवाई अड्डों पर सभी नागरिक उड़ान संचालन 9 से 14 मई, 2025 तक निलंबित रहेंगे, जो (15 मई 2025 को 0529 आईएसटी के अनुरूप

है)। इसके अलावा एएआई ने दिल्ली और मुंबई उड़ान सूचना क्षेत्रों के भीतर एयर ट्रैफ़िक सेवा मार्गों के 25 खंड अस्थायी रूप से बंद किया है। ये 25 मार्ग खंड जमीनी स्तर से असीमित ऊंचाई तक सुलभ नहीं होंगे। देश के जिन 32 हवाई अड्डों को सभी तरह के नागरिक उड़ान संचालन के लिए अस्थायी रूप से बंद किया गया है, उनमें अधमपुर, अंबाला, अमृतसर, अवंतीपुर, बठिंडा, भुज, बीकानेर, चंडीगढ़, हलवारा, हिंडन, जैसलमेर, जम्मू, जामनगर, जोधपुर, कांडला, कांगड़ा, केशोद, किशनगढ़, कुल्लू मनाली, लेह, लुधियाना, मुंद्रा, नलिया, पठानकोट, पटियाला, पोरबंदर, राजकोट, सरसावा, शिमला, श्रीनगर, थोइस और उत्तरलाई शामिल है। मंत्रालय ने कहा कि इस अवधि के दौरान इन हवाई अड्डों पर सभी नागरिक उड़ान गतिविधियां बंद रहेंगी। वहीं, एयरलाइंस और फ्लाइट ऑपरेटरों को मौजूदा हवाई यातायात परामर्श के अनुसार वैकल्पिक रूटिंग की योजना बनाने की सलाह दी गई है। साथ ही सुरक्षा सुनिश्चित करने और व्यवधान को कम करने के लिए संबंधित एटीसी इकाइयों के समन्वय में अस्थायी बंद का प्रबंधन किया जा रहा है।

सोनीपत में हुई 4,18,648 टन गेहूं की खरीद

एजेंसी

सोनीपत। हरियाणा में सोनीपत की विभिन्न मंडियों में शाम तक 4,18,648 टन गेहूं की आवक दर्ज की गईयह जानकारी शनिवार को उपायुक्त मनोज कुमार ने दी। उन्होंने बताया कि कुल आवक में से खाद्य एवं आपूर्ति विभाग ने 1,21,600 टन, हैफेड 1,73,603 टन, हरियाणा वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन ने 91,089 टन, तथा फूड कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया (एफसीआई) ने 14,578 टन गेहूं की खरीद की है। इसके अतिरिक्त 17,778 टन गेहूं की खरीद आम उपभोक्ताओं द्वारा (कमर्शियल गेहूं) की गई है।

जिले की मंडियों में विभिन्न स्थानों पर हुई गेहूं की आवक इस प्रकार रही बरोदा 5050 टन, भैंसवाल 6286 टन, बिचपड़ी 1,275 टन, दातौली 5,384 टन, फरमाणा 15,124 टन, गन्नौर मण्डी 33,054 टन, गोहाना 1,39196 टन, हुल्लाहेड़ी 2,063, टन, कासंडी 11,184 टन, कथूरा 11,746 टन, खानपुर 9,412 टन, खरखौदा 58,507 टन, मोहाना 12,515, टन, मुण्डलाना 9,184 टन, मुरथल 10,462 टन, नाहरा 8,790 टन, पुगथला 15,448 टन,पुरखास 8,420 टन, रूखी 12,686 टन, सनपेड़ा 10,213 टन, सोनीपत मण्डी 32,649 टन की खरीद की उपायुक्त ने बताया कि अब तक जिले की मंडियों में 31,076 किसान अपनी फसल लेकर पहुंचे हैं, जिनसे 2,425 रुपये प्रति क्विंटल की दर से गेहूं की खरीद की गई है।

महंगाई आंकड़ों पर रहेगी बाजार की नजर

एजेंसी

मुंबई। भारत-पाकिस्तान तनाव से सहमे निवेशकों की बिकवाली के दबाव में बीते सप्ताह करीब डेढ़ प्रतिशत तक लुढ़के घरेलू शेयर बाजार की अगले सप्ताह अप्रैल के जारी होने वाली थोक और खुदरा महंगाई के आंकड़े पर नजर रहेगी। बीते सप्ताह बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 1047.52 अंक अर्थात 1.3 प्रतिशत का गोता लगाकर सप्ताहांत पर आठ कारोबारी सत्र के बाद 80 हजार अंक के मनोवैज्ञानिक स्तर से नीचे 79454.47 अंक पर आ गया। इसी तरह नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 338.7 अंक यानी 1.4 प्रतिशत की गिरावट लेकर 24008.00 अंक पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में बीएसई की दिग्गज कंपनियों की ही तरह मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में भी जमकर बिकवाली हुई। इससे मिडकैप 596.37 अंक अर्थात 1.4 प्रतिशत लुढ़ककर सप्ताहांत पर 42111.50 अंक और स्मॉलकैप 623.59 अंक यानी 1.3 प्रतिशत कमजोर रहकर 46741.95 अंक रह गया।

बाजार विश्लेषकों के अनुसार, भारत और पाकिस्तान के बीच हालिया तनाव के बावजूद घरेलू शेयर बाजारों में निवेशकों की धारणा पर इसका सीमित प्रभाव देखने को मिला है। इस वर्ष अप्रैल में निरंतर विदेशी संस्थागत निवेश (एफआईआई) और रिकॉर्ड वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) संग्रह ने भारतीय अर्थव्यवस्था की मजबूती का संकेत दिया, जिससे बाजारों में स्थिरता बनी रही। कमजोर अमेरिकी डॉलर और स्थिर कच्चे तेल की कीमतों ने विदेशी निवेशकों का भरोसा और मजबूत किया है। भारत-ब्रिटेन के बीच संभावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) की सकारात्मक चर्चा ने विशेष रूप से कपड़ा, ऑटोमोबाइल और सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में तेजी को समर्थन दिया। वैश्विक स्तर पर भी संकेत उत्साहवर्धक रहे हैं। अमेरिका की फेडरल रिजर्व ओपेन मार्केट कमेटी (एफओएमसी) की नीतिगत बैठक के सतर्क रुख के बावजूद अमेरिका और चीन व्यापार वार्ता की संभावित बहाली तथा अमेरिका और ब्रिटैन व्यापार समझौते को लेकर आशावाद ने वैश्विक बाजारों को सहारा दिया। इसके साथ ही पीपुल्स बैंक ऑफ चाइना द्वारा ब्याज दरों में कटौती के फैसले ने क्षेत्रीय बाजारों में सकारात्मक रुख को बढ़ावा दिया, जिससे निवेशकों का विश्वास और मजबूत हुआ।

बाजार की अगले सप्ताह दिशा निर्धारित करने में घरेलू स्तर पर उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित खुदरा महंगाई और थोक मूल्य सूचकांक (डब्ल्यूपीआई) आधारित थोक महंगाई जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक आंकड़े अहम भूमिका निभाएंगे। विशेषज्ञों को उम्मीद है कि मुद्रास्फीति के दबाव में कुछ नरमी देखने को मिल सकती है। हालांकि, भारत-पाकिस्तान के बीच जारी भू-राजनीतिक तनाव एक महत्वपूर्ण जोखिम बना हुआ है। बावजूद इसके बाजार को उम्मीद है कि भारत की कूटनीतिक, आर्थिक और सैन्य शक्ति इस संकट को जल्द सुलझा लेगी।

चना गरम, अरहर दाल नरम

एजेंसी

नई दिल्ली। स्थानीय स्तर पर उठाव कमजोर रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में चना में तेजी रही जबकि अरहर दाल में नरमी को छोड़कर खाद्य तेल समेत शेष सभी जिंसों में टिकाव रहा।

तेल-तिलहन : इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी:मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टीके रहे।

दाल-दलहन :दाल-दलहन के बाजार में मिश्रित रूख देखा गया। इस दौरान चना और चना दाल 100-100 रुपये प्रति क्विंटल उबल गयी जबकि अरहर दाल 100 रुपये प्रति क्विंटल टूट गयी। मसूर दाल, मूंग दाल और उड़द दाल के भाव पिछले दिवस के स्तर पर स्थिर रहे।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

सरकारी वेबसाइट पर जारी खाद्यान्नों के थोक दाम इस प्रकार रहे :-

दाल-दलहन : चना 5950-6050, दाल चना 6950-7050, मसूर काली 7550-7650, मूंग दाल 9650-9750, उड़द दाल 9150-9250, अरहर दाल 8300-8400 रुपये प्रति क्विंटल रहे।

अनाज :(भाव प्रति क्विंटल) गेहूं दड़ा 2950-

3050 रुपये और चावल 3550-3650 रुपये प्रति क्विंटल रहा।

चीनी-गुड़ : चीनी एस 4280-4380, चीनी एम. 4500-4600, मिल डिलीवरी 3620-3720 और गुड़ 4400-4500 रुपये प्रति क्विंटल बोले गये।

खाद्य तेल : सरसों तेल 15751 रुपये, मूंगफली तेल 18314 रुपये, सूरजमुखी तेल 16484 रुपये, सोया रिफाइंड 14725 रुपये, पाम ऑयल 13919 रुपये और वनस्पति तेल 16116 रुपये प्रति क्विंटल पर रहा है।

एक्मे सीकर सोलर पावर परियोजना में 52.5 मेगावाट का पहला चरण शुरू

एजेंसी

नई दिल्ली। एक्मे सोलर होल्डिंग्स लिमिटेड ने राजस्थान के बीकानेर में एक्मे सीकर सोलर पावर परियोजना के 52.5 मेगावाट के पहले चरण को शुरू करने की घोषणा की है।कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि 52.5 मेगावाट की वर्तमान कमीशनिंग 300 मेगावाट की सौर परियोजना का हिस्सा है जिसे चरणों में पूरी तरह से चालू किया जाएगा। इस उपलब्धि के साथ कंपनी की कुल परिचालन क्षमता 2,540 मेगावाट से बढ़कर 2,592.5 मेगावाट हो गई है। भारत के सबसे ऊंचे सौर विकिरण क्षेत्रों में से एक में रणनीतिक रूप से स्थित, यह भारत के अक्षय ऊर्जा लक्ष्यों में एक महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए तैयार है। यह परियोजना राजस्थान के बीकानेर में 1300 एकड़ में फैली हुई है। इस परियोजना के माध्यम से प्राप्त स्वच्छ ऊर्जा को इन्वर्टर स्टेशनों पर एकत्र किया जाता है और एक समर्पित सिंगल सर्किट 220 केवी ट्रांसमिशन लाइन का उपयोग करके बीकानेर-दो ग्रिड को भेजा जाता है। पीएफसी लिमिटेड के माध्यम से वित्तपोषित, इस परियोजना से इसके पूर्ण कमीशन के बाद सालाना लगभग 780 मिलियन यूनिट स्वच्छ ऊर्जा उत्पन्न होने का अनुमान है। परियोजना से उत्पन्न बिजली को व्यापारिक आधार पर बिजली एक्सचेंजों पर बेचा जाएगा।

इक्विटी म्यूचुअल फंड में चौथे माह भी गिरावट, एसआईपी में रिकॉर्ड 26632 करोड़ का निवेश

एजेंसी

नई दिल्ली। इक्विटी म्यूचुअल फंड (एमएफ) में निवेश अप्रैल, 2025 में 3.24 फीसदी घटकर 24,269 करोड़ रुपये रह गया। यह लगातार चौथा महीना है, जब इक्विटी एमएफ में निवेश घटा है। हालांकि, म्यूचुअल फंड योजनाओं में शुद्ध निवेश लगातार 50वें महीने सकारात्मक बना रहा।

एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) ने आंकड़े जारी कर बताया, पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच बढ़ते तनाव से शेयर बाजार में जारी अस्थिरता के कारण यह गिरावट आई है। पिछले महीने इक्विटी एमएफ में निवेश मार्च के 25,082 करोड़, फरवरी के 29,303 करोड़, जनवरी के 39,688 करोड़ और दिसंबर, 2024 के 41,156 करोड़ रुपये से काफी कम है। आंकड़ों के मुताबिक, इक्विटी एमएफ में गिरावट के बावजूद सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) में निवेशकों का आकर्षण बना हुआ है। अप्रैल में एसआईपी के जरिये म्यूचुअल फंड में निवेश मार्च के चार महीने के निचले स्तर से उबरते हुए रिकॉर्ड 26,632 करोड़ रुपये पहुंच गया। मार्च में एसआईपी के जरिये म्यूचुअल फंड में निवेश मामूली घटकर 25,926 करोड़ और फरवरी में 25,999 करोड़ रुपये रहा था।

46 लाख नए एसआईपी खाते पंजीकृत

आंकड़ों के मुताबिक, बीते महीने कुल 1.36 करोड़ निष्क्रिय एसआईपी खाते बंद हो गए। इसके बावजूद एसआईपी खातों की कुल संख्या मार्च के 8.11 करोड़ से बढ़कर अप्रैल में 8.38 करोड़ पहुंच गई। इस अवधि में 46 लाख नए एसआईपी खाते पंजीकृत हुए?हैं।

एयूएम 70 लाख करोड़ रुपये के नए शिखर पर

एम्फी के मुताबिक, म्यूचुअल फंड उद्योग का एयूएम (प्रबंधन के अधीन संपत्तियां) अप्रैल में बढ़कर 70 लाख करोड़ रुपये के नए शिखर पर पहुंच गया। यह मार्च के 65.74 लाख करोड़ रुपये से करीब 6.50 फीसदी अधिक है। फरवरी में उद्योग का एयूएम 64.53 लाख करोड़ था। इक्विटी श्रेणियों में फ्लेक्सी कैप फंड में निवेशकों ने सबसे अधिक 5,542 करोड़ रुपये का निवेश किया। मिडकैप और स्मॉलकैप म्यूचुअल फंडों में क्रमशः 3,314 करोड़ व 4,000 करोड़ का निवेश हुआ। लार्जकैप फंड में 2,671 करोड़ रुपये का निवेश आया। मार्च में यह 2,479 करोड़ रुपये था। वेल्थ मैनेजर चिराग जैन कहते हैं, इस समय बाजार की गिरावट में निवेशकों को म्यूचुअल फंड के एसेट अलोकेशन फंड को चुनना चाहिए। यह फंड इक्विटी, डेट, कमोडिटीज, रियल एस्टेट जैसी संपत्तियों में निवेश करता है। इससे जोखिम कम होता है व उचित रिटर्न मिलता है, क्योंकि सभी संपत्ति वर्ग एक समय में एक जैसा प्रदर्शन नहीं करते।

फिल्म की तरह लग रहा है...भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच

जान्हवी कपूर

ने जताई चिंता, भारतीय सेना को भी किया सलाम

भारत और पाकिस्तान के बीच स्थिति दिन-बा-दिन खराब होती जा रही है. दोनों ही देशों से हमले किए जा रहे हैं. हालांकि, अगर ऐसा ही चलता रहा तो जल्द ही दोनों देशों में जंग छिड़ जाएगी. ये सब शुरू हुआ 22 अप्रैल को, जब आतंकियों ने कश्मीर के पहलगाम में मासूमों पर हमला किया और उन्हें मौत के घाट उतार दिया. इस घटना के कुछ दिन बाद भारत ने पाकिस्तान में स्थित आतंकी ठिकानों पर हमला किया. जिसके बाद से पाकिस्तान भी भारत पर हमले की कोशिश में लगा हुआ है. हालांकि, इस स्थिति से लोगों में डर का माहौल भी बना हुआ है.बॉलीवुड एक्ट्रेस जान्हवी कपूर ने भी सोशल मीडिया के जरिए दोनों देशों में चल रहे तनाव के बीच अपने डर को जाहिर किया है. दरअसल, जब से भारत ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर अटैक कर कई आतंकियों को मार गिराया. इसके बाद ही पाकिस्तान की तरफ से भारत के कई हिस्सों पर हमला किया था. इस पूरी घटना पर बात करते हुए जान्हवी ने अपने ऑफिशियल इंस्टाग्राम पर स्टोरी शेयर की, जिसमें उन्होंने लिखा कि न्यूज चैनल और सोशल मीडिया देखकर लग रहा है कि हम किसी फिल्म से निकले हैं.

घबराहट हुई महसूस

जान्हवी ने आगे कहा कि मैंने अभी तक की अपनी जिंदगी में भारत में ऐसा कुछ होते नहीं देखा है. एक्ट्रेस ने अपनी फीलिंग्स के बारे में बात करते हुए लिखा कि उन्होंने इस तरह की स्थिति देखकर ऐसी घबराहट महसूस की है, जैसा उन्होंने पहले कभी एक्सपीरियंस नहीं किया है. आगे एक्ट्रेस ने लिखा कि ऐसे वक्त में उन सभी समय की याद आई जब बाहरी देशों में किसी भी तरह की तकरार पर हम सेफ जगह से उसे खत्म करने की बात करते हैं. पर इस बार ये हमारे ही दरवाजे पर आ गया है.

हम अटैक नहीं करते

एक्ट्रेस ने देश के बारे में बात करते हुए लिखा कि इतिहास से, कभी भी आक्रामक नहीं रहे हैं. हम अटैक नहीं करते, हम उन जगहों और लोगों पर खुद को थोपते नहीं हैं जो हमारा स्वागत नहीं करते, हम भारत हैं. अपनी सुरक्षा के बारे में बात करते हुए एक्ट्रेस ने भारतीय सेना को शुक्रिया अदा किया है.

साथ ही साथ निर्दोषों को इस जंग से बचाए रखने की कामना भी की है. अभी की स्थिति की बात करें, तो भारत के कई इलाकों में पूरे तरीके से ब्लैकआउट का आदेश दे दिया है.

अनुपम खेर की 'तन्वी द ग्रेट' में नजर आएंगी पल्लवी जोशी, निभाएंगी ये खास किरदार

अनुपम खेर पिछले 4 दशकों से भी ज्यादा समय से लोगों को एंटरटेन करते हैं. वो हर बार अपनी उम्दा अदाकारी के जरिए लोगों के दिलों पर छा जाते हैं. पिछले कुछ समय से वो अपनी अपकमिंग फिल्म 'तन्वी द ग्रेट' को लेकर सुर्खियों में चल रहे हैं, जिसमें बॉलीवुड के कई बड़े सितारे नजर आने वाले हैं. 'द कश्मीर फाइल्स' फिल्म की एक्ट्रेस पल्लवी जोशी अनुपम खेर की पिक्चर का हिस्सा हैं.अनुपम खेर ने 'तन्वी द ग्रेट' को डायरेक्ट किया है. उनकी इस फिल्म में जैकी श्रॉफ, बोमन ईरानी जैसे बड़े स्टार्स दिखने वाले हैं. 10 अप्रैल को सोशल मीडिया पर उन्होंने एक पोस्ट शेयर करते हुए बताया कि पल्लवी जोशी भी इस फिल्म का हिस्सा हैं. उनके कैरेक्टर का नाम विद्या रैना है और उनका ये किरदार काफी खास होने वाला है.

अनुपम खेर ने की पल्लवी जोशी की तारीफ

अनुपम खेर ने एक लंबा-चौड़ा नोट भी लिखा और पल्लवी जोशी की तारीफ की है. उन्होंने कहा, मैं पल्लवी जोशी का प्रशंसक रहा हूं. वो टीवी की असली डिवा हैं. उनका सिनेमा की दुनिया में कदम रखना हमारी इंडस्ट्री के लिए तोहफा है. वो बहुत सिलेक्टिव तरीके से अभिनय करती हैं, लेकिन जब भी वो स्क्रीन पर होती हैं तो 100 प्रतिशत तय होता है कि एक नेशनल अवॉर्ड आने वाला है. उनके इमोशन की रेंज की कोई लिमिट नहीं है.

अनुपम खेर ने आगे लिखा, तन्वी द ग्रेट में उनका किरदार दया, बलिदान और शक्ति का प्रतीक है. वो उन शानदार एक्ट्रेसेस में से हैं, जिनके साथ मैंने काम किया है. प्रिय पल्लवी आपके सपोर्ट के लिए आपका शुक्रिया. आपके साथ काम करना मेरे लिए सीखने का अनुभव रहा है. हमारी भारतीय सेना के लिए आपकी समझ दिल को छू लेने वाला और संक्रामक है. जय हिंद.

जैकी श्रॉफ का खास किरदार

कुछ समय पहले अनुपम खेर ने जैकी श्रॉफ को भी इंट्रोड्यूस किया था. वो इस फिल्म में सेना में ब्रिगेडियर जोशी का किरदार निभाने वाले हैं. जब से अनुपम खेर ने इस फिल्म की घोषणा की है, उसके बाद से ही इस पिक्चर की काफी चर्चा हो रही है. फैंस इस फिल्म का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. हालांकि. अभी रिलीज डेट का ऐलान नहीं हुआ है.

13 साल छोटे अक्षय कुमार के प्यार में पागल थीं रेखा? इस मशहूर एक्ट्रेस ने बताया था दोनों के रिश्ते का सच

रेखा और अक्षय कुमार दोनों ही हिंदी सिनेमा के दिग्गज कलाकार हैं. रेखा ने 70 के दशक में अपनी शुरुआत की और 90 के दशक तक छाईं रहीं. जबकि 90 के दशक में डेब्यू करने वाले अक्षय कुमार अब भी हिंदी सिनेमा में काम कर रहे हैं. अक्षय और रेखा को इस दौरान साथ काम करने का मौका भी मिला और तब दोनों के अफेयर की अफवाह भी उड़ी थी.

अक्षय कुमार और रेखा दो अलग-अलग दौर के कलाकार हैं. दोनों के बीच उम्र में 13 साल का फासला है. दिग्गज एक्ट्रेस रेखा 'खिलाड़ी कुमार' से 13 साल बड़ी हैं. हालांकि, फिर भी जब दोनों ने साथ में फिल्म 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' में स्क्रीन शेयर की थी तो दोनों को लेकर कहा गया कि दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं. हालांकि, बाद में मशहूर एक्ट्रेस रवीना टंडन ने दोनों के रिश्ते की सच्चाई उजागर की थी.

शादी करने वाले थे अक्षय-रवीना

अक्षय कुमार का शिल्पा शेट्टी के साथ अफेयर काफी चर्चा में रहा. लेकिन, ब्रेकअप के बाद एक्टर की लाइफ में रवीना टंडन की एंट्री हुई. दोनों ने चोरी छिपे सगाई भी कर ली थी. लेकिन, ये रिश्ता ज्यादा लंबा नहीं चल सका और साल 1998 में दोनों अलग हो गए थे. इसके बाद अक्षय ने ट्विंकल खन्ना को डेट करना शुरू किया था.

रवीना ने तोड़ी थी रेखा-अक्षय के रिश्ते पर चुप्पी

जब अक्षय और रवीना रिश्ते में थे तब ही दोनों को रेखा के साथ साल 1996 में आई फिल्म 'खिलाड़ियों का खिलाड़ी' में काम करने का मौका मिला था. बॉक्स ऑफिस पर ये फिल्म सुपरहिट साबित हुई थी. इसमें अक्षय और रेखा के बीच इंटीमेट सीन भी देखने को मिले थे. इसके चलते अक्षय और रेखा के अफेयर की खबरों को और भी ज्यादा बल मिलने लगा था.

लेकिन रवीना ने एक इंटरव्यू में इन अफवाहों को खारिज कर दिया था.जब रेखा और अक्षय के कथित अफेयर की खबरें सुर्खियां बटोर रही थीं तब रवीना, अक्षय के साथ सीरियस रिलेशनशिप में थीं. उन्होंने बताया था कि इन अफवाहों का उनके रिश्ते पर गहरा असर पड़ा था. रवीना ने एक इंटरव्यू में कहा था, मुझे नहीं लगता कि अक्षय का कभी रेखा से कोई लेना-देना था. असल में वो उनसे दूर भागते थे.

सोहा अली खान

से झगड़े के बीच बाथरूम चले जाते हैं कुणाल खेमू, वजह सुन छूट जाएगी हंसी

बॉलीवुड फिल्मों में बतौर चाइल्ड आर्टिस्ट करियर की शुरुआत करने वाले कुणाल खेमू आज पटौदी खानदान के दामाद हैं. पटौदी फैमिली के नवाब सैफ अली खान की छोटी बहन सोहा अली खान के साथ कुणाल खेमू ने शादी की थी. कई साल डेट करने के बाद दोनों ने शादी की और आज एक बेटी के पैरेंट्स हैं. कुणाल और सोहा के बीच बहुत प्यार है, लेकिन ये प्यार कभी-कभी नोक-झोंक में भी बदल जाता है.इसके बारे में कुणाल खेमू ने एक इंटरव्यू में बताया था, जब वो 'द कपिल शर्मा शो' में बतौर गेस्ट बनकर पहुंचे थे. यहां कुणाल ने कहा था कि जब उनका और सोहा का झगड़ा होता है, तो उनकी इंग्लिश एक्टर को समझ ही नहीं आती.

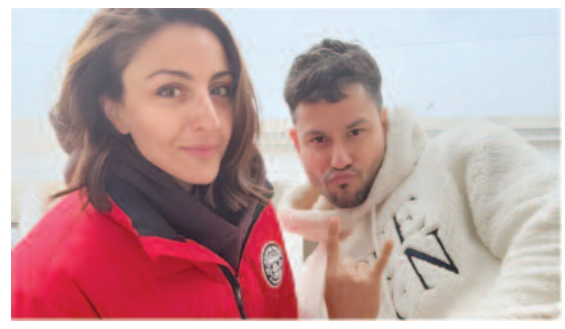

कैसा होता है कुणाल खेमू का सोहा अली खान से झगड़ा ?

शो में कपिल शर्मा ने एक्टर से पूछा, 'कुणाल आपके बारे में एक अफवाह ये भी है कि सोहा की इंग्लिश समझने के लिए आप एक इंग्लिश डिक्शनरी रखते हैं.' इसपर एक्टर ने जवाब में कहा था, 'डिक्शनरी नहीं रखता हूं, लेकिन कई बार ऐसा होता है कि जब भी हम झगड़ते हैं तो वो इंग्लिश में बोलती है और मैं हिंदी में झगड़ता हूं. "एक बार ऐसा हुआ कि एक बड़ा वर्ड उसने मेरी तरफ फेंका, जो मुझे बिल्कुल भी समझ नहीं आया. मुझे लगा कि अभी गुस्सा करूं या ना करूं, फिर मैंने बोला एक सेकेंड और मैं बाथरूम में गया मोबाइल निकाला, गूगल पर चेक किया कि उसने मुझे क्या कहा था. फिर मैंने कहा चलो ये ठीक है अब आगे बढ़ते हैं. तो मेरी वोकैबलरी उसकी वजह से काफी अच्छी हो गई है.'

सोहा अली खान से कुणाल खेमू की शादी कब हुई ?

इसी वीडियो में कुणाल खेमू ने बताया था कि सोहा अली खान लंदन के ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ी हैं, इसलिए उनकी इंग्लिश अच्छी है और वो ज्यादातर इंग्लिश में ही बात करती हैं. लेकिन कुणाल मुंबई में पढ़े हैं और उनकी इंग्लिश लोकल वाली ही है, जो काम चलाने के लिए काफी है.

46 साल की सोहा अली खान दिवंगत मंसूर अली खान पटौदी और दिग्गज एक्ट्रेस शर्मिला टैगोर की छोटी बेटी हैं. सोहा ने कुछ बॉलीवुड फिल्मों में काम भी किया है और आज भी वो इंडस्ट्री में एक्टिव हैं.